229
P
809
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1300
1971

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 809

3/

20-1

891.431
C395

ॐ

स्वराज्य-गीताञ्जली

(प्रथम भाग)

रचयिता—

कविरत्न श्री चतुर्वेदी शैलेन्द्र जी गायन भूषण

सम्पादक—

साहित्याचार्य्य श्री पं० सोमदत्तजी शर्मा महोपदेशक

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा—
लहरी प्रेस काशी में मुद्रित।

298
809

हिन्दी नवयुग ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प

॥ ॐ ॥

❀ वन्देमातरम् ❀

स्वराज्य गीतांजली ।

(प्रथम भाग)

रचयिता—

गायन भूषण श्री चतुर्वेदी शैलेन्द्र जी धर्मालङ्कार

संपादकः—

श्री पं० सोमदत्त जी शर्मा साहित्यरत्न महोपदेशक

प्रकाशकः—

"हिन्दी नवयुग" ग्रन्थमाला कार्य्यालय
काशी

प्रथमावृत्ति १००० }

सर्वाधिकार स्वरक्षित है

{ मूल्य ।)

धन्यवाद

हम गया निवासी श्रीमान् स्वदेश सेवक साहित्य प्रेमी परोपकारी श्री मान् राय हरिप्रसाद लाल जी को कोटिशः धन्यवाद देते हैं। जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशित करने में आर्थिक सहायता प्रदान की है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आप को सदैव धन सन्तान से परिपूर्ण रक्खें ताकि आप सदैव इसी भांति देश सेवा के कार्यों में सहायता प्रदान किया करें।

भवदीय

व्यवस्थापक

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 809
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

समर्पण

विहार प्रान्त गया निवासी सुप्रसिद्ध देशभक्त,
साहित्य सेवी एवं विद्याप्रेमी
और
काशीस्थ "नवयुक महामण्डल" के वर्तमान प्रधान सभापति

श्रीमान राय हरिप्रसाद लाल जी रईस

की

सेवा में

यह "स्वराज्य गीताञ्जली" सादर समर्पित है

उपहार के छुद्रत्व पर मत दृष्टि भगवन दीजिये ।
कृपया इसे स्वीकार कर सानन्द मुझको कीजिये ॥

आपका स्नेही
"शैलेन्द्र"

दो शब्द

सज्जनों !

अतिकाल से मेरी हार्दिक अभिलाषा थी की समयानुसार नवीन भाव मय स्वराज्य सम्बन्धी राष्ट्रीय गीतों को एक महत्वपूर्ण नवीन पुस्तक आप के समक्ष उपस्थित करूं, परन्तु अनेक विघ्न, बाधाओं के कारण मैं अपनी इस आकाँक्षा की पूर्ति न कर सका।

आज ईश्वर की असीम कृपा से मुझे अनेक दिनों की हृदयाभिलाषा पूर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अतः आज "स्वराज्य गीताञ्जली" के नाम से यह अपूर्व राष्ट्रीय भजनों की पुस्तक आपके सन्मुख रखने का साहस करता हूं ! आशा है आप इसे स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करेंगे।

यों तो इस समय पुस्तक विक्रयताओं तथा कुछ मनुष्यों ने इधर उधर के भजनों को संग्रह करके अनेक पुस्तिकायें प्रकाशित कर जनता से धन संग्रह किया है परन्तु उनमें प्रायः पुराने ही गीत हुआ करते हैं, जिनसे साधारण जनता को कोई विशेष लाभ नहीं होता, इसी कमी की पूर्ति के हेतु इस पुस्तक का निर्माण किया है। इसमें लगभग सभी भजन नवीन और जाति के सोये हुए लालों को जगा कर स्वदेश सेवा का नूतन भाव सञ्चार करने तथा समस्त भारत सन्तान को कर्म योग पथगामी बनाने वाले हैं। ध्यान रहे यह पुस्तक द्रव्योपार्जन अथवा व्यापारिक इच्छा से नहीं वरन् हिन्दी प्रचार तथा देश सेवार्थ ही प्रकाशित की गई है।

सर्व साधारण को हिन्दी की उत्तमोत्तम विविधि विषयों की नवीन पुस्तकें अल्प मूल्य में देने के हेतु हमने नवयुवक महामण्डलान्तर्गत काशी से "नवयुग ग्रन्थमाला" के नाम से नियम बद्ध एक ग्रन्थमाला निकालना प्रारम्भ किया है, जिसमें समय समय पर समयानुसार भावमय हिन्दी की पुस्तकें प्रकाशित हुआ करती हैं, और उनकी बिक्री से जो कुछ आय होती है वह हिन्दी तथा देश सेवार्थ ही व्यय की जाती है, अतः भारत सन्तान होने के नाते से आपका परम कर्तव्य है कि जहाँ तक हो सके इस ग्रन्थ माला की पुस्तकों का प्रचार स्वयं करें और दूसरों द्वारा कराते हुए हमारे उत्साह की वृद्धि कर यश तथा पुण्य के भागी बनें !

देश का सेवकः—

शैलेन्द्र

ॐ

स्वराज्य-गीताञ्जली

(प्रथम भाग)

ईश-वंदना

(ईश प्रार्थना १)

हे दीनानाथ अनाथ बन्धु फिर हमें अपनाइये।
करतार भारत के गए दिन भी पुनः दिखलाइये॥
क्या फिर भी भारत वर्ष में अर्जुन, युधिष्ठिर, कृष्ण से?
होंगे नहीं बलवान पण्डित और लीन अनन्त में॥
सब देशों का जो मुकुट था वह हाय! भारत है यही।
जिसके निवासी ठोकरें खाते जगत में हैं यही॥
विद्या कला में निपुण भारत जगत का शिर मौर था॥
हा! आज उस पर सैकड़ों विपता उमड़ आईं महा।
अब राजनैतिक विषय की आलोचना मत कीजिये।
न-तो वास कारागार की होबे सजा सुन लीजिये॥
अब स्वत्व अपने मांगना भी राज्य का विद्रोह है।
अब सत्य भाषण भी यहां सम्राट के प्रति द्रोह है॥
यदि चाहते हो देश रक्षा गेह को निज छोड़िये।
"शैलेन्द्र" जेल में जाइये संसार से मुख मोड़िये॥

स्वराज्य डंका

(प्रार्थना २)

कृपया स्वराज डंका जल्दी बजा दो माधव।
परतंत्रता की बेड़ी जल्दी कटा दो माधव॥
निज धर्म नीति शिक्षा निर्णीत हो हमी से।
स्वत्व प्रदान रवि से पंकज खिलादो माधव॥
स्वच्छन्द पूर्ण शशधर भारत गगन में विचरे।
"शैलेन्द्र" दास बन्धन जल्दी कटा दो माधव॥

ईश प्रार्थना

(कव्वाली ३)

इस देश को हे दीन बन्धु आप फिर अपनाइये।
भगवान भारत वर्ष को फिर पुण्य भूमि बनाइये॥
जड़ तुल्य जीवन आज इसका विघ्न बाधा पूर्ण है।
हे रम्ब अब अवलम्ब दे कर विघ्न हर कहलाइये॥
हम मूक किम्बा मूर्ख हों रहते हुये तुझ शक्ति के।
मा शीघ्र कह दे ब्रह्म से सुख शान्ति फिर सरसाइये॥
सर्वत्र बाहर और भीतर रिक्त भारत हो चुका।
फिर भाग्य इसका हे विधाता पूर्व सा पलटाइये॥
तू अन्नपूर्णा मा, रमा, है और हम भूखों मरें।
कह दे जनार्दन से जगा कर दैन्य दुःख मिटाइये॥
ये सृष्टि गौरव गज ग्रशित है ग्रह दिशा के जाल में।
हे भक्त वत्सल शुभ सुदर्शन चक्र जल्द चलाईये॥

मा, शंकरी सन्तान तेरी हाय यों दुःख पा रही ।
श्री कृष्ण से कह दे कि हे हर अब न और रुलाइये ॥
शून्य श्मशान समान भारत हाय अब तो हो चुका ।
आ कर कराल विपत्ति पथ से व्योम केश बचाइये ॥
सम्पूर्ण गुण गौरव रहित हम पतित अवनत हो चुके ।
अब छोड़ निर्गुणता प्रभो सत्वर सगुण बन जाइये ॥
गोपाल अब वह चैन की बन्शी बजैगी कब यहां ।
आलस्य से अविभूत हम को कर्म योग सिखाइये ॥
जिस वसुमति पर आपने बहुभांति लीलाये रचीं ।
करुणा निधे इस काल उसको आप यों न भुलाइये ॥
पशु तुल्य परबसता मिटे प्रगटे यथार्थ स्वातंत्रता ।
इस कूप मण्डूकत्व से परमेश पिण्ड छुड़ाइये ॥
जीवन गहन बनसा हुआ है भटकते हैं हम जहां ।
प्रभुवर सदय होकर हमें सन्मार्ग पर पहुंचाइये ॥
वो पूर्व की स्वातंत्रता ये वर्तमान परतंत्रता ।
अब तो प्रसन्न भविष्य की आशा यहां उपजाइये ॥
स्वातंत्र जिनका मंत्र था परतंत्र पीड़ित हैं वही ।
फिर वहो पुरुषार्थ इनमें शीघ्र ही प्रगटाइये ॥
यह पाप पूर्ण पराबलम्बन चूर्ण हो कर दूर हो ।
फिर स्वाबलम्बन का हमें प्रिय पूर्ण पाठ पढ़ाइये ॥

ईश वन्दना

(भजन ४)

यही दो वरदा मा वरदान ।
ऐसे कार्य करें जिससे हो भारत का उत्थान ।
भारत भूमि सुखी फिर होवे यह कह दो भगवान ॥१॥

मैं हिन्दू तुम मुसलमान यह भेद भाव कर दूर।
मिल हम दोनों भाई मा के कष्ट करेंगे दूर॥
यही बस मनमें लें अब ठान॥ २॥
कष्ट बहुत हैं? सह लेंगे, क्या दोगे अपनी जान?
हाँ भावी रक्षा हित तन भी कर देंगे बलिदान॥
इसी में समझें अपनी शान॥ ३॥
भारत में विद्या का फिर से होवे खूब प्रचार।
दिन प्रति दिन बसु तुल्य करें हम अद्भुत आविष्कार॥
सिखायें जग को हम फिर ज्ञान॥ ४॥
हम स्वतन्त्रता लाभ करें हो सुख हो सुख चहुं ओर।
एक बार फिर गूंज उठे भारत के चारों ओर॥
कन्हैया की मुरली की तान॥ ५॥

ईश प्रार्थना

(ग़ज़ल ५)

अय ओ३म् नाम वाले हम पर दयाल हो जा।
मुद्दत से मुल्तजी हैं पूरा सवाल होजा॥
भारत वर्ष का इकदिन जग में था नूर रोशन।
देखें वही जमाना फरखन्दा फाल होजा॥
भारत वर्ष की हालत अबतर बहुत हुई है।
इसका सुधार होज़ा कामिल कमाल होज़ा॥
गुज़रा बहुत ज़माना दुखड़े उठा रहे हैं।
रहमत से तेरी दुख सब ख्वाबे खयाल होजा॥
मेरे वतन में जिसने बरपा की पायमाली।
यारब मेरे अदू का जल्दी ज़वाल होजा॥

जिस तौर से अदू ने गुलशन मेरा उजाड़ा।
वैसे ही मुल्के दुश्मन खुद करके ताल होजा॥
तेरे शिकम से मादर क्या अब नहीं है मुम्किन।
कोई रामो कृष्ण अर्जुन वलि की मिसाल होजा॥
गर ख्वाब में भी हमको आँखें दिखाये कोई।
अर्जुन का बाण उसकी जाँ को बवाल होजा॥
मुद्दत में रहनुमाँ इक हमको मिला है गान्धी।
इसकी उमर दयामय ! इक लाख साल होजा॥

ईश प्रार्थना।

[गज़ल ६]

तेरा नाम अन्तर्यामी है तू महान से भी महान है।
तेरे वास का न ठिकान हैं तू महान से भी महान है॥
तूने चन्द्र सूर्य्य बना दिए उन्हें रात दिन में पठा दिये।
तेरा रूप अन्तर्ध्यान है तू महान से भी महान है॥
तू ने भूमि, नभ, पताल, वायु, जल अगिन भी बना दिये।
तेरी दश दिशायें विमान हैं तू महान से भी महान है॥
दिये हाथ हम को काम को अरु जीभ महिमा बखान को।
तू सर्व्व बुद्धि निधान है तू महान से भी महान है॥
तू ने रात दी विश्राम को अरु दिन दिया है काम को।
तू सब तरह अभिराम है तू महान से भी महान है॥
अपनी कृपा विस्तार दे "शैलेन्द्र सेवक" पर प्रभुः।
तुझ ही से मुझ को काम है तू महान से भी महान है॥

[प्रभाती ७]

दयानिधि करहु कृपा दीना नाथ ॥ टेक ॥
भारत आरत होय पुकारत, करत बिलाप हजार ।
रक्षक होय बन्यो भक्षक है, कीजे कवन बिचार ॥ दया निधी॥
द्रुपद सुता की लाज बचाई, कीन्ह चीर विस्तार ।
ग्राह बध्यो प्रभु! गजहिं उबार्यो, तुम्हरी महिमा अपार ॥ दया०
दास प्रह्लाद की रक्षा कीन्ही, हिरणकशिपुहिं मार ।
गारत करहु राज अधरम को, टुक करुणा हिय धारि ॥ दया०
बिनती करत "शैलेन्द्र" महा प्रभु, करुणा निधि सतसार ।
सब दुःख भंजन, मुनि मन रंजन, भंजन धरणी भार ॥ दया०

भगवान राम से प्रार्थना

(ग़ज़ल ८)

तुम्हारी ये जन्म भूमि राजन,
रहेगी कैदी समान कबतक ।
इसे छुड़ाने को दुःख से अब,
न लोगे तीरो कमान कब तक ॥
घटा घटा कर घमंड भारी,
प्रभात की हो चुकी तैय्यारी ।
न दूर है सूर्य की सवारी,
हटेगी अब ये निशां न कब तक ॥
जमाना बेढब निकल चुका है,
पुराना फन्दा भी गल चुका है ।
अब शेर करवट बदल चुका है,
रहेगा खोकर यों शान कब तक ॥

विदेशी पापी पिशाच उद्दण्ड,
सभी तरफ से उमड़ रहे हैं ।
तुम्हारे हाथों से धूल में अब,
मिलेगा इनका न मान कबतक ॥
स्वतंत्रता की सुरभ्यताने,
सुमञ्ज गुंजार कर रही हैं ।
यह देश भारत हमारा फिर भी,
वनेगा सुखकी न खान कब तक ॥
विजय यहीं से हुई तुम्हारी,
उसीकी फिर हो रही तैय्यारी ।
मिलेगा "शैलेन्द्र" शीघ्र तुझको,
स्वराज्य सुखदाई राज्य कब तक ॥

[प्रार्थना ९]

कोदण्ड धार सन्मुख मेरे आजा, अखियाँ तरस रहीं ॥
मै दास हूं स्वामी सब दिन, चाहे कामी दुष्ट सही ।
भव सागर पार लगा दो जी, मेरी नैया जात बही ॥ १ ॥
हो जाओ दयालु अब तो, मैं लाखों कष्ट सही ।
तेरे ही हेतु रघुवर छानी है, बन २ ख़ाक मही ॥ २ ॥
कीजै सहाय भगवन् दुख, भरे हैं अन गिन ही ।
अब रहूं मैं मारे कब तक; मन को बताओ ही ॥ ३ ॥

प्रार्थना

[भजन १०]

दिव्ये दिव्य ज्योति प्रकटा दो ।
पौरुष के प्रदीप्त को आओ करुणा करो जला दो ॥

देवि अनय तम तोम निवारो पावन पुन्य प्रकाश पसारो ।
सत्य धर्म के बल से पशुता क्षण में मार भगा दो ॥
देवासुर संग्राम छिड़ा है न्याय और अन्याय भिड़ा है ।
देर न करो व्यर्थ में अम्बे पाप गढ़ी को ढा दो ॥
दास्य बेड़िया कटें देश की रक्षा हो जातीय वेष की ।
सुख स्वातंत्र सुधा संज्ञीवन भारतमें बरसा दो ॥
अत्याचारी सिर झुक जायें दमन,दमन हो पाप नशायें ।
शान्ति पूर्ण सुन्दर स्वराज्य हो बिजयी साज सजा दो ॥

वन्देमातरम्

वन्देमातरम्

(ग़ज़ल ११)

मिलने को आया हूं ले लो मेरा वन्देमातरम् ।
याद में मेरी हमेशा जपना बन्देमातरम् ॥
मैं मरीजे हुव्वे वतनी क़ैद से क्या हो शफ़ा ।
या तो आवे तेग़ हो या नुसख़ा बन्देमातरम् ॥
जब शहीदे कौम का निकले जनाज़ा राहसे ।
राहगीरो तुम लगाना नारा बन्देमातरम् ॥
ख़ाक से मेरी उगेगा जो शजर भी वादे मर्ग ।
हरवर्ग पर उसके लिखा होवेगा वन्देमातरम् ॥
खाल खीचें जिस्म की या वह चढ़ायें दारपर ।
मुंह से जो मनसूर निकले कलमा बन्देमातरम् ॥

तू तज्जुर्वा तेग़का अपनी भी क़ातिल देखले ।
हर दहाने ज़ख़्म से निकलेगा बन्देमातरम् ॥
जव से बच्चा गर्भ में हो देश भक्ति तुम सिखाव ।
ता ज़ुवां से शब्द निकले पहिला वन्देमातरम् ॥
गो मरीज़े क़ौम वेशक हो चुकी है ला इलाज ।
काम दे अकसीर का पर नुसख़ा वन्देमातरम् ॥
मेरे टुकड़े कर चुका पीछे उड़े कातिल के होश ।
राम हर टुकड़ा बना और बोला बन्देमातरम् ॥

वन्देमातरम्

[क़व्वाली १२]

छीन सकती है नहीं सरकार बन्देमातरम् ।
हम गरीबों के गले का हार वन्देमातरम् ॥
सर चढ़ों के सर में चक्कर उस समय आता जरूर ।
कान में पहुंची जहां झन्कार वन्देमातरम् ॥
हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर ।
आज तो चिल्ला रहा संसार वन्देमातरम् ॥
जेल में चक्की घसीटूं भूख से हूं मर रहा ।
उस समय भी बक रहा बेज़ार वन्देमातरम् ॥
मौत के मुंह पर खड़ा हूं कह रहा जल्लाद से ।
भोंक दे सीने में अब तलवार वन्देमातरम् ॥
डाक्टरों ने नब्ज़ देखी सिर हिलाकर कह दिया ।
हो गया इसको तो अब आज़ार वन्देमातरम् ॥
ईद होली दसहरा सुबरात से भी सौगुना ।
है हमारा लाड़ला त्योहार बन्देमातरम् ॥

जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़जायगा।
फैसला होगा सरे दरबार बन्देमातरम् ॥

वन्देमातरम्

[क़व्वाली १३]

हम भारतीयों का सदा है प्राण बन्देमातरम्।
हम भूल सकते हैं नहीं शुभ तान बन्देमातरम् ॥
देश के ही अन्न जल से बनसका यह खून है।
नाड़ियों में हो रहा संचार बन्देमातरम् ॥
स्वाधीनता के मंत्र का है सार बन्देमातरम्।
हर रोम से हरबार हो सञ्चार बन्देमातम् ॥
झूमती तलवार हो सरपर मेरे परवा नहीं।
दुश्मनों ! देखो मेरी ललकार बन्देमातरम् ॥
धार खूनी खजरों की बोथरी हो जायगी।
जब करोड़ों की पड़े झङ्कार बन्देमातरम् ॥
टांग दो सूली पै मुझको खाल मेरी खींचलो।
दम निकलते तक सुनो हुङ्कार बन्देमातरम् ॥
देश से हम को निकालो भेज दो यम लोक को।
जीत लें संसार को गुंजार बन्देमातरम् ॥
चौंकते हो क्यों सुनो तुम मंत्र वन्देमातरम्।
चीर कर देखो कलेजा तंत्र बन्देमातरम् ॥
डायरी है कायरी और कर्जनी अन्याय है।
हम इन्हें समझायेंगे हर बार बन्देमातरम् ॥
मृत्यु शैय्यापर मुझे उल्लास होवेगा तभी।
प्राण यदि "शैलेन्द्र" छूटें कहते बन्देमातरम् ॥

वन्देमातरम्

[क़व्वाली १४]

शुद्ध सुन्दर अति मनोहर शब्द वन्देमातरम् ।
मेरा सुखकर दुख हारी शब्द वन्देमातरम् ॥
औज में बल कान्ति में सुख शान्ती वन्देमातरम् ।
अति सहायक मति प्रदायक शब्द वन्देमातरम् ॥
मुख हृदय में रात दिन हो जाप वन्देमातरम् ।
खाते समय सोते समय कल गान वन्देमातरम् ॥
प्रेम से मनमें उठे मृदु तान बन्देमातरम् ।
नाड़ियों के रक्त का संचार वन्देमातरम् ॥
तेग़ से शिर भी कटे भूलो न वन्देमातरम् ।
मौत की घड़ियां गुजारो जाप वन्देमातरम् ॥
जेल में हो तो जपो जय जाप वन्देमातरम् ।
बेड़ियों को ही बजाके गाओ वन्देमातरम् ॥
तोर गोली तोप की जय आड़ वन्देमातरम् ।
तेग़ बरछी के लिये दृढ़ ढाल वन्देमातरम् ॥
विश्व बिजयी शत्रु बिजयी मंत्र वन्देमातरम् ।
"शैलेन्द्र" का दृढ़ कवच है जय शब्द वन्देमातरम् ॥

वन्देमातरम्

[क़व्वाली १५]

गणराज शारद सदगुरु चरणार वन्देमातरम् ।
जगद्दीश्वरो विश्वम्भरो सही नाम वन्देमातरम् ।

उत्पत्ति पालन प्रलय करने हार वन्देमातरम् ॥
सब जीव योनी मात्र का आधार वन्देमातरम् ।
वसुधा विशाली हिन्द की ये स्वनिज कल करतार ने ॥
पगुधार संकट हारले अवतार वन्देमातरम् ।
पहिले अनेकों बार करके दया सिरजन हारने ।
भारत हमारे देश का जयकार वन्देमातरम् ॥
कर कृपा आयुष महात्मा कि वृद्धि से उपकार हो ।
जिनकी सफलता से सुखी नरनार वन्देमातरम् ॥
नेताओं के वरदान से सुधरे प्रथा संसार की ।
तू दे अधर्मी ज़ुल्मियोँ को टाल वन्देमातरम् ॥
विपता अधर्मी दे रहे सहने न पावें हम ज़रा ।
आख़ीर ज़ुल्मों से हार के असहकार वन्देमातरम् ॥
संसार गो आधार सों सर सब्ज़ हर वर सार तू ।
प्रतिपाल कर रखवाल हो गोपाल वन्देमातरम् ॥
धरि कवच जय जय यत्न सारे अंग रक्षा के लिये ।
तोपो तमञ्चा तीर अरु तलवार वन्देमातरम् ॥
वन्दूक भाला शूल वरछी मूल तीखी धार में ।
हर वार मुख से हम उचारें मंत्र वन्देमातरम् ॥
वीर वाके हिन्द वासी दमन से डरते नहीं ।
"शैलेन्द्र" अब नहिं देर शान्ति सुधार वन्देमातरम् ॥

भारत का प्राचीन गौरव

वह देश कौनसा है ?

(कव्वाली १६)

मन मोहनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग सा जहां है वह देश कौन सा है ?
जिसका चरण निरन्तर रतनेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय वह देश कौनसा है ?
नदियां जहां सुधासी धारा बहा रहीं हैं,
सींचा हुआ सलौना वह देश कौनसा है ?
जिस के बड़े रसीले फल कन्द नाज मेवे,
सब अंग में सजे हैं वह देश कौनसा है ?
जिस में सुगन्ध वाले सुन्दर प्रसून प्यारे,
दिन रात हँस रहे हैं वह देश कौनसा है ?
मैदान गिरि बनों में हरियालियां सुहातीं,
आनन्दमय जहां है वह देश कौनसा है ?
जिसके अनन्त धन से धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि वह देश कौनसा है ?
जिसमें हुये अलौकिक तत्वज्ञ ब्रह्मचारी,
गौतम, कपिल, पतञ्जलि, वह देश कौनसा है ?
छोड़ा स्वराज तृणवत आदेश से पिता के,
वह राम थे जहां पर वह देश कौनसा है ?
निस्स्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहां थे,
लक्ष्मण, भरत सरीखे वह देश कौनसा है ?

देवी पवित्रता की सीता जहां हुई थी,
माता पिता जगत का वह देश कौनसा है ?
आदर्श नर जहां पर थे बाल ब्रह्मचारी,
हनुमान, भीष्म, शंकर, वह देश कौनसा है ?
विद्वान, बीर, योगी गुरू राज नैतिकों का,
श्री कृष्ण थे जहां पर वह देश कौनसा है ?
बिजयी, बली, जहां के बेजोड़ शूरमा थे,
गुरू द्रोण, भीम, अर्जुन, वह देश कौनसा है ?
जिसमें दधीच दानी हरिश्चन्द्र कर्ण से थे,
सब लोगों का हितैषी वह देश कौनसा है ?
बालमीक, व्यास ऐसे जिसमें महान कवि थे,
श्री कालीदास वाला वह देश कौनसा है ?
निष्पक्ष न्याय कारी जन जो पढ़े लिखे हैं,
वह सब बता सकेंगे वह देश कौनसा है ?

भारतीयगौरव

(ग़ज़ल) १७

दिन गये जब कि सन्मान सुरपुर में था।
आज दुनिया में अपना ठिकाना नहीं ॥
था जमाना हमारा कभी किन्तु हा ।
आज वह दिन नहीं वह जमाना नहीं ॥
दासता का किसी से भी नाता न था ।
हमें आखें यों कोई दिखाता न था ॥
आज यह हुक्म है सर कटै तो कटै ।
पर खबरदार सर को हिलाना नहीं ॥

फिर फिरेंगे तुम्हारे भी दिन एक दिन।
अस्त हो जांयगे ये अदिन अति कठिन॥
कीर्ति राकेश होगा उदित मन मुदित।
तब कुमद बन से फूले समाना नहीं॥

भारत गुणगान

(थियेटर १८)

यह भारत वर्ष हमारा अतिप्यारा,
द्दगतारा, है जीवन धार हमारा॥ टेक॥
ऋषि मुनियों की जन्म भूमि यह,
कृष्णचन्द्र की कर्म भूमि यह,
धर्म राज की धर्म भूमि यह,
पावन देश हमारा॥ अति प्यारा॥
वेद नाद मय रुचिर सुहावन;
हवन धूम्र धूसर अति पावन,
धर्म, कर्म रह जन उपजावन,
गो-गोरस निधि धारा॥ अति प्यारा॥
हिरण्य गर्भा भूमि हमारी,
सब देशन को पालन हारी,
बिधि ने पूरी रीति सँवारी,
सब देशन से न्यारा॥ अति प्यारा॥
वीर प्रसवनी मातु हमारी,
राम कृष्ण को जन्मन हारी,
धन्य धन्य माता मम प्यारी,
ईश ने स्वर्ग उतारा॥ अति प्यारा॥

जब हो जन्म तुझी में पाऊं,
रात दिवस तब शुभ गुण गाऊं,
तब सेवा में बलि बलि जाऊं,
"शैलेन्दर" यही बिचारा ॥ अति प्यारा ॥

मातृभूमि गौरव

[थियेटर १९]

तन, मन, धन, तुझपर समर्पित हो ॥ टेक ॥
उत्तर में तेरे हिमालय खड़ा है,
दक्षिण में बिन्ध्या पडी है गुहन,
तेरे तीन ओर सिन्धु झमक चूमता चरन ॥ तन ॥
गोद में तेरे लाख नदियां बहत हैं,
कलरब मनोहर मचाती हुई,
ब्रह्मपुत्र पंचनद गंगा जमुन,
सभी हिल मिल के आतीं हैं गातीं बजातीं,
सुनाती हैं तेरो भजन ॥ तन ॥
मखमली गद्दा तेरा कैसा हरा है,
जिसपर तू रात दिन करती शयन,
मलीयाचल से जाती है पंखे डुलाती है,
तुम को सदा ये पवन ॥ तन ॥
ऊपर यह कैसा चन्दवा तना है,
रंग विरंगे हैं जिसके गहन,
जिसमें सलमें सितारे के तारे लगे हैं,
कैसा अनूठा गगन ॥ तन ॥
तुझ सा धनी जगमें है कौन दूजा,
किसका है ऐसा सुसज्जित भवन,

जिस में हीरे वो मोती की झालर लगी हैं,
करोड़ों जड़े हैं रतन ॥ तन ॥
सेवक तुम्हारा है सागर व सरिता,
भिश्ती तुम्हारा है ये श्याम घन,
जो गरज कर के आता है,
पानी बरसाता बुझाता है जग का तपन ॥ तन ॥
कोयल की कू कू सुरीली कहीं है,
बुल बुल का होता कहीं है भजन,
तोता तूती भी बोले "शैलेन्द्र"
प्रिय की पपीहा लगाती रटन ॥ तन ॥

भारत देश

(भजन २०)

हमारा प्यारा भारत देश ।
धारण करें स्वदेशी व्रत हम तजै विदेशी बेष ॥ टेक ॥
भक्त बने हम मातृ भूमि के, सिद्ध करें उद्देश ।
बन्धु बन्धु में भिन्न भावना, रहे नहीं लवलेश ॥
आर्य्य भूमि में प्रेम परस्पर फलै जाय सविशेष ।
भारतीय नेता सब मिल कर, करें यही उपदेश ॥
देश हितैषी बन कर सब जन, पर हित करें विशेष ।
धर्म भाव से पावन हृदयी, रहे देश निःशेष ॥
दान करो बरदान यही अब जगत पिता अखिलेश ।
यही भावना बस हैं मेरी बने स्वर्ग यह देश ॥

(ग़ज़ल २१)

कुछ भी रही न हम में प्राचीनता हमारी ।
शिष्यों ने छीन ली है स्वाधीनता हमारी ॥

संसार में सबों से नीचे गिरे हुये हैं।
बिख्यात हो रही है अकुलीनता हमारी ॥
चिन्ता सदैव धन की दुःख दे रुला रही है।
विद्या वहादुरी में है हीनता हमारी ॥
आशा नरेश सुख की अब तो रही न कुछ भी।
मानो हमें न छोड़ेगी दीनता हमारी ॥

प्राचीन भारत स्मर्ण

(ग़ज़ल २२)

हमें जब पूर्व भारतवर्ष के वन याद आते हैं।
अहा! तव ध्यान में आनन्द के उन्माद आते हैं॥
जहाँ की प्राकृतिक शोभा हृदय को शान्त करती थी।
अलौकिक उच्च भावोँ को विचारों में विचरती थी॥
खड़ी ऊंची नुकीली चोटियाँ हिम से चमकती थीं।
पहाड़ों की सजावट देख कर आंखे न थकतीं थीं॥
हरी थी भूमि घासों से तराई में तबोबन था।
जहाँ सवको सदा स्वाधीनता थी प्रेम वन्धन था॥
हरिन गोसिंह आपस में मिले चरते विचरते थे।
नहीं थी शत्रुता उनमें किसी से वे न डरते थे॥
कहीं वच्चे मृगों के चौकड़ी भरते उछलते थे।
कहीं थे कूदते जो वत्स मां के साथ चलते थे॥
न खाने के लिये कुछ भी कमी थी कन्द मूलों की।
प्रचुरता थी कली मेवे फलोँ की और फूलोँ की॥
सुनाते गान पक्षी और केकी नृत्य करते थे।
अनोखे दृश्य ये सबके व्यथा प्राणोँ की हरते थे॥

पहाड़ी झील झरनों से नदी आश्रम में वहती थीं।
उसी के तीर पर सुन्दर कुटी मुनियों की रहती थीं॥
उन्हीं में ब्रह्मचारी देश के सर्वस्व पलते थे।
हमारी जाति के भूषण वहीं से ही निकलते थे॥
उषा में जाग सब पक्षी फुदकते थे चहकते थे।
चटकते पुष्प पौधे मुसकराते थे महकते थे॥
बड़ा समुदाय मधुपों का सुरीली तान भरता था।
चराचर को जगाता वायु सन सन शब्द करता था॥
तरंगे खेलतीं थीं धार कल कल गीत गाती थीं।
पहाड़ी जल प्रपातों की बड़ी ध्वनी गूंज जाती थीं॥
इन्हीं के साथ में जब सामवेदी नाद होता था।
सुखी सानन्द जीवन के लिये संवाद होता था॥
पता चलता नहीं तब था कहीं मन के विकारों का।
हृदय में स्रोत वहता था सुधारक सद्विचारों का॥
सदाचारी इसी से ब्रह्मचारी वीर होते थे।
बली विद्वान ज्ञानी साहसी गम्भीर होते थे॥
सुधी आचार्य की सेवा सदा श्रद्धालु करते थे।
नहीं वे भूल कर भी दुर्व्यसन में पैर धरते थे॥
सुशिक्षा उच्च भावों की वहां दिन रात मिलती थीं।
कुचेष्टा के झकोरों से न उनकी वुद्धि हिलती थी॥
इसी विधि गुरुकुलों में ब्रह्मचारी वीर पढ़ते थे।
वहाँ से देश में आदर्श जीवन लेके कढ़ते थे॥
भरा था ओज अङ्गों में दमकता तेज था मुख में।
हृदय में पूर्ण साहस था न घबराते थे वे दुःख में॥
सदा मन शुद्ध रहता था वनावट वे न रखते थे।
नहीं अच्छे गुणों से हीन वे शोभा निरखते थे॥

भारत की प्राचीनता

(ग़ज़ल २१)

वक्त था जब तावो ताक़त थी हमारे तीर में।
आवो जौहर थे कभी तो ख़न्ज़रों शम्सीर में॥
शर्क़ से तागर्ब हर इक जा हुकूमत अपनी थी।
बांध रक्खा था जहाँ को अदल की ज़न्जीर में॥
आंख हम से दहर में कोई मिला सक्ता न था।
वीरता जिस वक्त थी क्षत्राणियों के शीर में॥
सान ये कुदरत की वह नज़ेर इनायत हमपे थी।
लाके जन्नत अर्श से रख दी थीं खुद कश्मीर में॥
फ़तह लंका का ख्याल आते ही झट पुल बध गया!
ऐसी ताक़त थी हमारे नाखुने तदबीर में॥
योग विद्या में था वह हासिल कमाल हमको कभी।
थी समाधी की सिफत हर फ़र्द की तस्वीर में॥
आज जो हालत है लेकिन नौजवानों देख लो।
मौत है या ख़्वाब है ऐ मेहर्बानों देख लो॥

भारत वर्ष की प्राचीनता

(कव्वाली २४)

मदफ़न में हसरतों का हिन्दोस्तां हमारा।
गुलचीं ने हाय लूटा ये गुलसितां हमारा॥
यक दिन रहे तरक्की में हम भी रहनुमा थे।
अब लोग पूछते हैं नामो निशां हमारा॥

यूनान मिश्र रोमां इंगलेन्ड फ्रान्स जर्मन।
शागिर्द यक ज़माने में था जहां हमारा॥
दुनिया में हो रहा था भारत बरष का चर्चा।
सब की जवान पर था लुत्फे बयां हमारा॥
इल्मो अदब में क़ामिल और हिन्दुसे के मूज़िद।
था फिलसफ़ा में यकता हर नुक़तदां हमारा॥
गौतम व व्यास भीषम थे नामवर यहों के।
अर्जुन से तीर अफ़गन था इक जहां हमारा॥
लीलावती अहिल्या अस्मत मेंआवसोता।
इन देवियों से घर था रश्के जहां हमारा॥
चर्खें कुहन ने हम पर लेकिन वो ज़ुल्मढाया।
मूनिस रहा न कोई अय मेहरवां हमारा॥
रौनक़ चमन की सारी फ़स्ले ख़िज़ां ने लूटी।
बीरान हो गया है सब गुलसितां हमारा॥
इफ़लास कहतो ताऊन ने हाय मार डाला।
फ़ाक़ों के मारे दम है अब नीमजां हमारा॥
फिर भी अगर है ख्वाहिश आवे वही ज़माना।
तो असहयोग कर लो होगा नफा तुम्हारा॥

भारत तथा भारत सन्तान की दुरावस्था

निर्धन भारत

(ख्याल २५)

इस मौके पर कोई देश नहिं निर्धन औ अज्ञान रहा ।
रहा अगर तो तीस कोटि लोगों का हिन्दोस्तान रहा ॥
जिसने कुछ तकलीफ उठा कर अपना कर्त्तव दिखलाया ।
उसका उसने उस मालिक से अच्छा पूरा फल पाया ॥
उन सब में औव्वल नम्बर का एक छोटा सा जापान रहा ।
खूब तरक्की औ आजादी चारों तरफ दिखाती है ॥
उन देशों को बला आन कर इसी जगह टकराती है ।
सोते थे सो भरी नींद में वे सब एक दम जाग पड़े ॥
कमर कसे अभिमान त्यागकर करते अपने काम खड़े ।
वह मुर्दा क्या उठैगा जिसके जलने का सामान रहा ॥
अपना ध्यान जिन्हें होता है उन्हें शोक से काम नहीं ।
धन देकर गैरों को बनते सब्ज परी गुलफाम नहीं ॥
नहीं शराब नहिं जुवा खेलते रन्डी नहीं नचाते हैं ।
पुण्य भूमि पर इस प्रकार से ऊधम नहीं मचाते हैं ॥
क्यों न नाश हो नहीं जिन्हों में धर्म और ईमान रहा ।
हों चाहै कमज़ोर आलसी पढ़े भी नागर होवैं कुछ ॥
पर दिल में हो यदि चोट देश की कर सकते हैं वे सब कुछ ।
सुनो भाइयो जिसके बल पर सारे मज़े उड़ाते हो ॥
उस बेचारे भारत को क्यों मिलकर नहीं उठाते हो ।
"माधव" कहता हाय न कोई आज बीर सन्तान रहा ॥
रहा अगर तो तीस कोटि लोगों का हिन्दोस्तान रहा ॥

अन्धेर

[भजन २६]

पड़े बन्धन में हैं गजराज। मुक्त फिरता हैं स्वान समाज॥
कुढंगा कोकिल का है साज। धरा कुक्कुट के सिर पर ताज॥
इसे हम कहैं दिनों का फेर। या कहैं दुनिया का अन्धेर॥१॥
कूप का निर्मल सीतल नीर। महा खारी है उदधि गम्भीर॥
ईशके भक्त अशक्त अधीर। दुष्ट राक्षस होते हैं बीर॥
घरों में अजा, बनों में शेर। देखिये दुनिया का अंधेर॥ २॥
नहीं घटती तारों की आब। न स्थिर माहताब की ताब॥
कुशल से किशुक खिले जनाब। कठिन काटों में खिले गुलाव॥
रत्न कम, पत्थर के हैं ढेर। देखिये, है कैसा अन्धेर॥३॥
पर्वत पर सोने की खान। राज पूताना रेगिस्तान॥
शंख का है सूखा सम्मान। किया सीपी को मुक्तादान॥
विधाता की सुबुद्धि का फेर। हो रहा है विचित्र अन्धेर॥४॥
कहां वह कमल, कहां यह कीच। न समझा उच्च न समझा नीच॥
लगाया है कलंक शशि-बीच। ले गया वह मनोज्ञता खींच॥
दिया है गरल सुधामे गेर। विधाता! यह कैसा अन्धेर॥५॥
महा गुरा कारी कडुवी नीम। बताते डाकृर बैद्य हकीम॥
भरें मीठे, में दोष असीम। विके दो गिन्नी सेर अफीम॥
और गुड़ दो ही आने सेर। कौन यह कहै नहीं अन्धेर॥६॥
बड़े ज्ञानी थे अष्टावक्र। और पर सन्तापी है क्षक्र॥
चलाता है विधि ऐसा चक्र। किया करता है ऐसे मक्र॥
लगी अन्धे के हाथ बटेर। चकित लोग हैं देख अन्धेर॥७॥
खपाया किये जान मजदूर। पेट भरना पर उनको दूर॥

उड़ाते माल धनिक भर पूर । मलाई लड्डू–मोतीचूर ॥
सुधरने में है जग के देर । अभी है बहुत बड़ा अन्धेर ॥८॥
अन्न दाता हैं धार किसान । सिपाही दिखलाते हैं शान ।
दुराते उन्हें तमाचा तान । तुम्हें क्या सूझी है भगवान् ! ॥
आवले खट्टे, मीठे बैर । किया है क्यों ऐसा अन्धेर ॥९॥
फिलिपायन के हिंसक लोग । जिन्हें था कल तक पशुता रोग॥
भोगते हैं स्वराज सुख भोग । वर्ष पच्चीस पै ऐसा योग ॥
रहा है भारत पर मुख हेर । बड़ा अंधेर ! बड़ा अन्धेर ॥१०॥

कृष्णावतार की आवश्यक्ता

(ग़ज़ल २७)

अगर एक बार योगी कृष्ण फिर दुनिया में आ जावें ।
रुखे अनवर का फिर एक बार जल्वा आके दिखलावें ॥
तो मैं कदमों पै उसके गिर पड़ूं दीवाना सा बनकर ।
रुखे रोशन पै खुद को वार दूं परवाना सा बनकर ॥
फिर उसको हाल इस उजड़े चमन का चलके दिखलाऊँ ।
हर एक शाखे बुरीदा की कथा मैं उसको सुनवाऊँ ॥
करूं कर जोड़ कर बिनती मैं फिर उस शाह आली से ।
मिटे जाते भगवन् भारती तो खस्ते हाली से ॥
जहाँ गऊवें चराया करते थे तुम ग्वाल खुद बनकर ।
वहीं चलतीं छुरी दिन रात अब गऊवों को गरदन पर ॥
कभी जिस कौम के बच्चे धर्म पर जान देते थे ।
धर्म के नाम पर सर्वस्व कर कुर्बान देते थे ॥
वही रोटी के टुकड़े टुकड़े पर अब जान देते हैं ।
वह कौड़ी कौड़ी पर अब बेंच धर्म ईमान ॥ देते हैं ॥

दुरावस्था

(गज़ल २८)

ये कैसा माजरा है मुल्क मिल्लत के ओ शैदाई।
रहेगा कब तलक बाजार मग़रिब का तमाशाई॥
कमर में बैलिसो गैलिस गले में कालरो टाई।
हजामत मग़रबी फैशन से तूने खूब बनवाई॥
नहीं चूल्हे तवे की अब तुझे रोटी पसन्द आती।
डवल रोटी औ विसकुट केक है दिल को तेरे भाती॥
तरक कर शरबते सन्दल गुज़र लैम्नेट पै करता है।
कूएँ का आवे शीरीं छोड़ कर आइस पै मरता है॥
शिकम तेरा कचौरी खीर हलुवे से अफरता है।
मटन और चाय से ही अब तो तेरा पेट भरता है॥
बरांडी रम व ह्विसकी बन गई जुज्बे गिजा तेरी।
जरा टुक देख हालत हो गई है क्या से क्या तेरा॥
डिनर के वास्ते दौड़ा हुवा होटल को जाता है।
पहन कर बूट खाना मेज कुरसी पर ही खाता है॥
बजाय तेल तिलके तेल मिट्टी का जलाता है।
कदीमी शान भारत को तू मिट्टी में मिलाता है॥
स्वदेशी का इधर तो नाम है विरदे जुबां तेरे।
उधर मगरिब के साँचे में ढले हैं उस्तखा तेरे॥
है इन्कम हिन्दियों का औसतन दो आना नौ पाई
हज़ारों फाका कर हिन्दू हुवे जाते हैं ईसाई॥
हज़ारों ने है जाकर मससजिदों में चोटी कटवाई।
मगर इस पर भी तेरा हाल ये फैशन के शैदाई॥

कि दस का बूट है तो तीस का है सूट बनवाया।
लगा कर चैनो चश्मा पूरा जैन्टिल मैन कहलाया॥
व फर्ज इस वक्त गौतम और कपिल भारत में फिर आयें।
रूखे अनबर जहाँ को आके फिर एक बार दिखलायें॥
तेरे अतवार को देखें तेरे आचार पर जायें।
तो सच कहता हूं गैरत से बिलाही मौत मर जायें॥
वजुर्गों की ये तूने आह क्या इज्जत बढ़ाई है।
कि खन्दा जन तेरे अतवार पर सारी खुदाई है॥
क्यों अपना घर तू अपने हाथ से बरबाद करता है।
मिटा कर अपना घर औरों का घर आबाद करता है॥
ज़रा से ज़ुल्म पर औरों की तो फ़रियाद करता है।
मगर अपने लिये खुदही सितम ईजाद करता है॥

वर्तमान जी हुजूरों की दशा

(ग़ज़ल २६)

गो लाख होशियार हूं और जी शऊर हूं।
धर्म के मैदान से रहता ही दूर हूं॥
मन्दिर सभा समाज में जाता कभी नहीं।
हुक्काम के सलाम को जाता जरूर हूं॥
पबलिक भी कुछ न कुछ है रोब मेरा मानती।
म्यूनिसपिल कमेटी का भी जी हुजूर हूं॥
लोगों की हाकिमों से मैं करता शिकायतें।
खोफ़िया पुलीस के दफ्तरों का भी हुजूर हूं॥
खुद क़िस्मती से राय बहादुर भी बन गया।
लीडर नहीं तो लीडरों की दुम ज़रूर हूं॥

साहब ने ख़फ़ा होके कहा मुझ से डैमफूल ।
तो मैं गिड़ गिड़ा के बोला जी हाँ हाँ हुजूर हूं ॥

आधुनिक जेन्टिल मैनों की दुरावस्था

[कव्वाली ३०]

योरोप से हिन्दोस्ताँ को हम जाना माँगटा ।
जोरु को लोग गड्डी में विठलाना मांगटा ॥
हम मांगटा सिगार विलायट का ही सिगरट ।
ये वहरा लोग देशी चुरट लाना मांगटा ॥
यूं वहरा लोग रोटी को मट लावो सामने ।
हम अच्छा वाला केक पस अब खाना मांगटा ॥
मट वोलो वाट मन्दिरो मसजिद की डैम फूल ।
हम ऐसी वाट सुनने से घबराना मांगटा ॥
हम वाप दादा लोग को पागल वना दिया ।
योरोप का वाट हिन्द में फैलाना मांगटा ॥
मिस्टर फिलिप जो आवें तो खुश होता हम बहुत ।
गर वाय मिलने आयें तो शरमाना मांगटा ॥
सर पर नहीं लपेटता हम लम्बा सा कपड़ा ।
हम हैट खास घास का सिलवाना मांगटा ॥
जाहिल पहिनना मांगटा पाजामा लोग को ।
हम वृजिस कोट पैंट को सिलवाना मांगटा ॥
हम देशी लोग की तरह हगटा कभी नहीं ।
सन्दूक हम पाख़ाने का बनवाना मांगटा ॥
पीता है दूध गायों का यह डैम फूल लोग ।
हम दूध खर का वच्चों को पिलवाना मांगटा ॥

बाबुओं का फैशन

[ग़ज़ल ३१]

डटा है सूट कालर के अलावा बूट डासन का।
बड़े बाबू खुदा बक्से बड़े फैशन के बन्दे हैं॥
गले में नैकटाई मिस्ले है फाँसी के रस्सो के।
कमर में मिस्ले मुजरिम देख लो गैलिस के फ़न्दे हैं॥
खड़े होकर हैं कुछ पेशाब करते ऐसे फ़ैशन से।
कि गोया आज ही जंगल से आये हैं दरिन्दे हैं॥
कभी शूटिङ्ग को जाते हैं तो चिड़ियां मार लाते हैं।
नज़र में शेर चीते इनकी ये बेकस परिन्दे हैं॥
फ़िसल जाता है दिल हर खूबरू को देख कर इनका।
बज़ाहिर पूरे जैन्टिल मैन हैं भीतर से गन्दे हैं॥
कहा एक रोज़ मैंने दान कुछ अपने वतन हित दो।
तो बोले ख़ाक दें एक जान है और लाख चन्दे हैं॥

भारत वर्ष में विदेशी चीजों का खर्च

[गज़ल ३२]

हिन्दुस्तान की माली हालत रोज़ाना बिगड़ी जाती।
खर्च दिनों दिन बढ़ता जावे देख देख फटती छाती॥
सन् सतरह की रिपोर्ट देखो अब हम तुमको समझाते।
६६ लाख का डासन बूट और ४५ लाखके हैं छाते॥
साढ़े १७ लाख का साबुन रगड़ रगड़ जो नित नहाते।
४२ लाख के तोड़े खिलौने फिर भी तो नहीं शरमाते॥
४६ लाख के बिस्कुट खाये फिर भी काया कुम्हलाती॥ १॥

१८ लाख ६० हज़ार का इतर बिलायत से आया ।
४८ लाख के घिसे क़लम निब गया ठीक ये बतलाया ॥
३३ लाख की सुइयां जिससे कपड़ा सिलवाया ।
६० करोड़ से ज्यादह रुपये का हमने कपड़ा मंगवाया ॥
१७ लाख की गोली रील पेचक सीने की जो यहां आती ॥२॥

साढ़े २५ लाख रुपये की फिटनें लाकर हमने करी खड़ीं ।
पूरे २८ लाख गये हैं जब से चश्मे की बान पड़ी ॥
६ करोड़ १३ लाख रुपये की हर क़िस्म की बिकी घड़ी ।
७ लाख के बटन वगैरह १३ लाख की दस्ती छड़ी ॥
१८ करोड़ और ६० लाख की मोटर जो फ़रफ़र जातीं ॥ ३ ॥

२ करोड़ और साढ़े ६६ लाख रुपये की बाइसिकल ।
लैम्प ४२ लाख पौंड के जलते हैं सूरते मसल ॥
१ करोड़ और २२ लाख की चूड़ी मंगवाते हैं अहले दवल ।
ढाई लाख पौंड की आईं सीने की सिंगर की कल ॥
२४ हजार पौंड के पंखे जिनकी हवा दिल को भाती ॥ ४ ॥

करते हैं वे मुल्क नबाबी ऐसे हो गये अफलातून ।
तेल लगा बैठे लाखों का घर में नहीं चने का चून ॥
आमद खर्च को नहीं देखते ऐसा सर पै चढ़ा जनून ।
२ करोड़ ६६ लाख रुपये के सेकिनहैण्ड कोट पतलून ॥
देख देख करतूत तुम्हारी भारत माता शर्माती ॥ ५ ॥
२४ लाख पौंड का काग़ज़ १७ लाख का फरनेचर ।
३८ लाख की कलम स्याही रहती है जिनके अन्दर ॥
२३ लाख के हैंडबैग जो जेण्टिलमैंन रखते अक्सर ।
कब तक तुम्हें सुनाऊं ब्यवस्था समय यहां पर है कमतर ॥
देखो अब औलाद कुबेर की भीक मांग कर के खाती ॥ ६ ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 809
Date 24.12.71
GOVT. OF INDIA

[बहरेतबील ३३]

उठायेंगे कब तलक मुसीबत गमों में कब तक फंसे रहेंगे।
ये शेरे भारत वर्ष के कब तक झुकाये सरको खड़े रहेंगे॥
नहीं है मुमकिन रखेगा हमसे हमेशा दौरे जमा अदावत।
ये कौन कहता है अब हमेशा दिलों पै पत्थर पड़े रहेंगे॥
मकान बख़्शा जिन्हें खुदाने मकां के बाहर पड़े हुये हैं।
भला जो मालिक हैं कब तलक वो मकां के बाहर पड़े रहेंगे॥
गुलाम जिसने बनाया हम को है उसका वर्ताव दुश्मनी का।
है उस पर भी गर उसीके हमदोस्त मुश्फ़िक़ बने रहेंगे॥
कोशिश करै गर तो एक चिउंटी ही करदे हाथी की नाक में दम।
फिर हम तो इन्सा हैं दूसरों से बताओ कब तक डरे रहेंगे॥
बस अब तो बे अक़्ल कसम खायें नहीं रहेंगे गुलाम इनके।
गले पै खञ्जर भी ये चला दें नहीं डरेंगे अड़े रहेंगे॥
उड़ा के गफ़लत की नींद अब हम उठेंगे देखेंगे रंगे दुनियां।
कहा के "शैलेन्द्र" मिस्ले मुर्दा न कब्र में अब पड़े रहेंगे॥

[कबतक ग़ज़ल ३४]

चलेंगी हिन्द में ये उल्टी हवायें कबतक।
टलेंगी सर से हमारे भी बलाये कबतक॥
पैदा तो हम करें ले जायें विलायत वाले।
कहो तो घर को भला हम यों लुटायें कबतक॥
देखते ही हमें जो ग़ैर कहा करते हैं।
उनके खितावों से इज्जत को बढ़ायें कबतक॥
जो कि गर्दन में गुलामी का तौक़ पहरादे।
ऐसी तालीम हम बच्चों को दिलायें कबतक॥

अब तलक देखा किये दिल को सब्र दे देकर।
देखिये करते हैं हम से ये वफ़ायें कबतक॥
लेकिन पंजाब की पुरदर्द अज़ायें आख़िर।
दिल से उस सब्र को अब भी न हटायें कबतक॥
मरकर के या ज़िन्दा हों आज़ाद हम तो होंगे।
ठान यह हमने लिया सरको झुकायें कबतक॥
हस्ती ये कलब मिटाने को नहीं है गुलजार।
भेजो भेजोगे तो भेजोगे क़ज़ायें कबतक॥

क्योंकर

[ग़ज़ल ३५]

हिन्द में आह चली उल्टी हवायें क्यों कर।
घिर के इफ़लास की आई हैं घटायें क्यों कर॥
खींचकर ग़ल्ला जो ले जांय विलायत वाले।
फिर कहो भूख से हम जां न गवायें क्यों कर॥
कभी ताऊन कभी कहत कभी हैज़ा है।
नहीं मालूम टलैंगी ये बलायें क्यों कर॥
शिद्दते दर्द है शमशीरे अलम को मालूम।
जो क़लेजे में हैं छाले वह दिखायें क्यों कर॥
क्या कमल जावे जो है गूंज में भवरों में मज़ा।
गोरे तसलीम करें कालों की अदायें क्यों कर॥
हम फ़लक फूंक कर रखते हैं ज़मी पै भी क़दम।
आस्मां सरपै उठायें तो उठायें क्योंकर॥

[क़व्वाली ३६]

उजड़ा हुआ पड़ा है यह गुलसिताने भारत ।
बरबाद हो चुका है ज़न्नत निशाने भारत ॥
पहिले तमाम वाक़ये अब हो गये फिसाने ।
जाती रही यकायक वह आन बान भारत ॥
भातर की हाय ! किश्ती ग़रदाव में पड़ी है ।
किस तरह सो रहे हैं अय ! किश्ती वाने भारत ॥
उठ बैठो नौ जवानो अबलो इसे बचालो ।
कुछ २ अभी है वाकी नामो निशाने भारत ॥
गर जोश में तुम आवो तो कुछ नहीं है मुश्किल ।
फिर वोही देख लैना पहिली सी शाने भारत ॥
मालूम है तुम्हें कुछ रोज़े अज़ल से सबके ।
उस्ताद रहते आये हैं आलिमाने भारत ॥
लेकिन हमारी हालत अब रहम के है क़ाबिल ।
बहशी कहा रहे हैं बाशिन्दगाने भारत ॥
इसकी वो शानो शौकत सब ख़ाक में मिली है ।
आलम में घूमता था पहिले निशाने भारत ॥
गर है तुम्हें मुहब्बत इस गुलशने बतनसे ।
यह अहद दिलसे करलो अय बुलबुलाने भारत ॥
जब तक कि दममें दम है हम दम रहेंगे इसके ।
यह सर नजर है इसकी यह जां है जाने भारत ॥

[ग़ज़ल ३७]

दुर्दशा हाथ से गीदड़ के तुम्हारी होली ।
शेर तुम कैसे हुवे ख़तम तो शेरी होली ॥

मालोज़र गैर को देकर के खरीदी तन्जेव ।
कौम ने फाका किया तुमने मनाई होली ॥
भाई २ से मिलो रञ्ज को दो ताक में रख ।
अब तो आजाद बनो बहुत गुलामी होली ॥
तंग रैय्यत जो किसी शाह से ही आये तो ।
शाह फिर दिल में समझ लेवे की शाहा होली ॥

विदेशियों के अत्याचार

[ग़ज़ल ३८]

बाग़ से सर सर का झौंका आशियाना ले गया ।
अन्दलीबों को कफ़स में आवोदाना ले गया ॥
कौन कहता है ज़बरदस्ती से हम पकड़े गये ।
जेल में खुद हमको शौके जेलख़ाना ले गया ॥
कुछ गुलो गुलचीं का शिकवा बुलबुले भारत न कर ।
तुझको पिंजड़े में है तेरा त्रह चहाना ले गया ॥
क्यो घटा अदबार की छाये न अहले हिन्दपर ।
खींच कर यूरोप सब मालो ख़ज़ाना ले गया ॥
पूंछते क्या हो ज़मींदारों की दौलत क्या हुई ।
कुछ वकील और कुछ नशे में मालियाना ले गया ॥
शूमिये किस्मत से एक दाने को हम तरसा कीये ।
झोलियां भर भर बग़र्ना कुल ज़माना ले गया ॥
भूख से तड़पें न क्यों कर हिन्द के बच्चें फ़लक ।
खींच कर रेलीविरादर दाना २ ले गया ॥

[ग़ज़ल ३६]

न हिन्दियों पर ज़वाल होता,
न अपनी हालत का ख्याल होता।
न दिल पै रंज्ञो मलाल होता,
न आज हक़ का सवाल होता॥
न प्लेग होता बलाये फ़ानी,
न होती गर हिन्द में गरानी।
न दिन पै दिन गर अकाल होता,
न आज हक का सवाल होता॥
न अफ्रीका में होती जिल्लत,
न थूकती हिन्दियों पै ख़लकत।
न गान्धी का वो कमाल होता,
न आज हक़ का सवाल होता॥
न होती कर्जन की क्रूरलीला,
न होता बंगाल गर, चुटीला।
न फिर स्वदेशी का ख्याल होता,
न आज हक़ का सवाल होता॥
न जेल होता न जाल होता,
न देश बाहर निकाल होता।
न बच्चों का इन्तकाल होता,
न आज हक़का सवाल होता॥
न रोती बिधवायें घर घरों में,
न ज़ुल्म होता जो खेतिहरों पै।
न हिन्द गर पायमाल होता,
न आज हक़ का सवाल होता॥

न होते गोविन्द गुरू हक़ीक़त,
न होता गान्धी सा फ़ख़्र इज़्ज़त।
तिलक न होते न लाल होता,
न आज हक़ का सवाल होता॥
न ज़ुल्म होते जो तुझ पै भारत,
न सोचता अपनी तू दशा को।
न तुझपै ईश्वर दयाल होता,
न आज हक़का सवाल होता॥

होली

[ग़ज़ल ४०]

न होगी क़ौम ऐसी जो न बढ़कर फिर घटी होगी।
कभी आगे बढ़ी होगी कभी पीछे हटी होगी॥
सुधर जाय तो गर हालत कभी दुखिया किसानों को।
तो देखोगे कि दौलत देशमें घर २ पटी होगी॥
दुशाला ओढकर बेठे हैं हम जिनकी बदौलत यों।
नहीं ग़म हमको इसका उनकी चादर गर फटी होगी॥
कमीना जिनको समझा था वह सीना साफ़ हैं बिलकुल।
किसे मालूम था मेरी समझ एसी लटी होगी॥
मिलेंगे सत्व सब साहस है किसका जौन रोकेगा।
चरण अंगद का बनकर क़ौम जब इसपर डटी होगी॥
जिलादे क़ौम को यकबार लादे फिर बड़ी हालत।
खिलादे आके क्या कोई कहीं ऐसी बटी होगी॥
रहा अभ्यास ऐसा ही तो कुछ ही दिन में अय मित्रो।
अदा से लेखनी पर नाचती कविता नटी होगी॥

[राग डफ ४१]

भारत में छाई काली घटा ॥ टेक ॥
नाम सत्य का डूबि गया है। अब अन्याई से काम पटा ॥१॥
महँगा हुआ बस्त्र अरु भोजन। खाने पीते नमक घटा ॥२॥
भांग अफीम, मद्य अरु ताड़ी। सब लोगन पीने गट्टगटा ॥३॥
धर्म, कर्म, का नाश भयो है। सत्य राज जब हिं से हटा ॥४॥
धन्य धन्य तू मोहन गान्धी। कमक्षेत्र में आनि डटा ॥५॥
होय स्वराज जब पुनि भारत में। आवेगो वह पूर्व छटा ॥६॥
भारत बासी त्राहि! त्राहि!! कर। कितने दिन तक हाय रटा ॥७॥
निश्चय जान "शैलेन्दर" अब तू। अन्याई शासन जल्दी हटा॥८॥

यह भी कोई चलन है

[ग़ज़ल ४२]

यह भी कोई चलन है यह भी कोई अदा है।
रोज़ इक नया सितम है रोज़ इक नई ज़फ़ा है॥
ग़ैरों की सल्तनत का यह कुदरती सिला है।
सरकार का है बाग़ी जो मुल्क पर फ़िदा है॥
पीलो मये शहादत साक़ी की यह सदा है।
हिन्दोस्ताँ नहीं है मयदाने करबला है॥
क्या शै से मांगते हो वह खुद ही भिख मंगा है।
तुम उससे क्यूं न मांगो वह जिससे मांगता है॥
उनकी नज़र में भारत अब तक हरा भरा है।
सावन के हैं वह अन्धे सब्ज़ा ही सूझता है॥
यह बात है पुरानी इस्लाम का खुदा है।
अल्लाह से अलहदा हिन्दू का देवता है॥

अब हमने गैरियत का परदा उठा दिया है।
इस्लाम के खुदा को हिन्दू बना लिया है॥
रीडिंग आये थे यहाँ क़ानून को निगलने।
क़ानून अब उन्हीं को उल्टा निगल रहा है॥
यह सोच कर के तुम सब हो शौकतो मोहम्मद।
बुरक़ा अलग उठा कर माता ने रख दिया है॥
कुछ भाइयो ख़बर है बिफ़री है सिहनी क्यों।
पिंजरें में बन्द उसके बच्चों को कर लिया है॥

हमारा अंगरेज़ी राज्य क साथ भला वर्ताव और इनकी विश्वास घातकता।

[ग़ज़ल ४३]

सैकड़ों बर्षों से हम नाज़ उठाते आये।
वसरो चश्म सदा हुक्म बजाते आये॥
दे दिये हाथ के हथियार ज़ुबां दे डाली।
मारकर मनको किसी तौर त्रिसाते आये॥
यहां तक इनके पसीने की जहां बूद गिरी।
हम सदा अपना वहां खून बहाते आये॥
हाय! तिसपर भी जरा इनकी तसल्ली न हुई।
राह में मेरे ये कांटे ही बिछाते आये॥

हमारा स्वदेश प्रेम

[मुसद्दस ४४]

हैफ़ हम जिस पै कि तैय्यार थे मरजाने को।
जीते जी हमसे छुड़ाया उसी क़ासाने को॥

क्या और वहाना न था तड़पाने को।
आस्मा सच बता येही था ग़ज़ब ढाने को॥
लाके गुरबत में जो रक्खा हमें तरसाने को।
अब तो काहे को मिलैगी वह हवा खाने को॥ हैफ़॥
दिल फ़िदा करते हैं कुरबाने जिगर करते हैं।
पास जो कुछ है हम भारत की नज़र करते हैं॥
मुल्क के वास्ते हम मुल्क ही को तजते हैं।
हर दरो दीवार पै हशरत की नजर करते हैं॥
खुश रहो अहले वतन हम तो सफ़र करते हैं।
जाके आबाद करेंगे किसी बीराने को॥ हैफ़॥
कोई माता की उम्मेदों पै न डाले पानी।
जिन्दगी भर को हमें भेज के काले पानी॥
मुँह में जल्लाद हुए जाते हैं छाले पानी।
आवो खञ्जर का पिला कर के दुआ ले सानी॥
भरने क्यों जायँ हम इस उम्र के पयमाने को॥हैफ़॥
हम भी आराम उठा सके थे घर पर रह कर।
हम को मां बाप ने पाला तो था दुखड़े सह कर॥
वक़्ते रुख़सत न हम आये तो थे यह भी कहकर।
आखों से अश्क गिरें गोद में तेरी बहकर॥
तिफ्ल उन्हीं को तू समझ लेना जी बहलाने को॥हैफ़॥
अपना कुछ ग़म नहीं पर यह ख्याल आता है।
मादरे हिन्द पै कब तक जवाल आता है॥
दुःख है मालोज़र भारत का लुटा जाता है।
धैर्य्य धर रोकने भारत का तिलक आता है॥
मुन्तज़िर रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को॥हैफ़॥
देखें कब तक यह असीरानें मुसीबत छूटें।

मादरे हिन्द के अब भाग्य खुलें या फूटें॥
देश के लाल पड़े जेलों में क़िस्मत फूटें।
और सद हैफ़ हम दिन रात बहारें लूटें॥
क्यों न तरदीद दें इस जीने से मरजाने को॥हैफ़॥
नौजवानों जो कभी दिल में तुम्हारे खटके।
याद कर लैना कभी हम को भी भूले भटके॥
देश भाई तुम्हारें होवें जुदा कट कट के।
और सद चाक हो माता का कलेजा फट के॥
तुम्हारे कानों पै अब भी न जूं रेंगाने को॥ हैफ़॥
कभी राहत में न मंजूर हुआ मेलह में।
जिन्दगी में तो न दीखा कभी यह बेल हमें॥
जान पै खेल के भाया न कोई खेल हमें।
याद आयेगा अलीपुर का बहुत जेल हमें॥
लोग तो भूल गये होंगे उस अफ़साने को॥हैफ़॥
एन्डमन इतनी बड़ी तेरी थी तक़दीर कहां।
जाते जाते जो रहे लाज, तिलक भी महेमाँ॥
तू छूके क़दमों के "पिल्लै" के बना था नोशाँ।
वह तो एजाज़ मटीले को मिला पाने को॥हैफ़॥
हम तो अब डाल चुके अपने गले में झोली।
एक रहती है फ़क़ीरों की हमेशा बोली॥
हिन्द स्वाधीन बनायेगी हमारी टोली।
जब से बंगाल में खेले हैं कन्हैय्या होली॥
कोई उस दिन से नहीं पूछता बरसाने को॥हैफ़॥

[ग़ज़ल ४५]

बेगुनाहों पर भी ज़ालिम करते हैं बेदाद भी।
पायेंगे इसका समर वह कुछ दिनों के बाद ही॥

भर के छर्रा पीछे जो चिड़ियों के फिरते हो जनाब ।
आदमी तुमको कहें अथवा कहैं सैय्याद भी ॥
खूने नाहक पर न आया रहम जिस वेदर्द को ।
हम कहें उसको मसीहा या कहें जल्लाद भी ॥
घूंस खाने का जिन्हें चस्का अज़ीज़ो पड़ गया ।
वह ग़रीबों की नहीं सुनते ज़रा फ़रियाद भी ॥
चापलूसो तुम यही कहना बस हरइक बात में ।
जी हुजूर हां ठीक है और है वजा इरशाद भी ॥
करना हमदर्दी भी ज़ाहिर राय देना खूब तुम ।
वेकसों कर पर कभी करना नहीं इमदाद भी ॥

वह कत्ल भी करते हैं—दामन भी बचाते हैं!

[ग़ज़ल ४६]

बेदाद भी करते हैं वह जुल्म भी ढाते हैं ।
नाम अहले बफ़ा का यों दुनियाँ से मिटाते हैं ॥
रो रो के जो दर्दे दिल हम उनको सुनाते हैं ।
रुक रुक के वह गर्दन पर शमशीर चलाते हैं ॥
दुनिया से निराले हैं अन्दाज़े सितम उनके ।
रोने भी नहीं देते आंखें भी दिखाते हैं ॥
सैयाद भी रह जाता है थाम के दिल अपना ।
मिल मिल के क़फ़स वाले जब शोर मचाते ॥
बदलेंगे हवा अब हम दुनिया को दिखा देंगे ।
यों डूबती किश्ती चो साहिल से लगाते हैं ॥
वह अपनी जफ़ा पर तो शर्मिन्दा नहीं होते ।
और उल्टा हमारे सर इलज़ाम लगाते हैं ॥

अब लेके रहेंगे हम हक़ अपनी वफ़ाओं का।
अब आपकी बातों में हम काहे को आते हैं॥
होतो हैं बुरी आहें इक दुःखे हुए दिल की।
क्यों आप किसी बेकस के दिल को दुखाते हैं॥
दिखला दिया दुनिया को गान्धी की सदावों ने।
सोई हुई क़ौमो को इस तरह जगाते हैं॥
बेदाद की आदत है, रुसवाई का कुछ डर है।
वह क़त्ल भी करते हैं दामन भी बचाते हैं॥
ग़फ़लत में पड़े थे जो वह चौंक उठे सुन कर।
'नश्तर' तेरे नाते तो सोतों को जगाते हैं॥

हाल क्या है ?

[ग़ज़ल ४७]

नज़र इनायत रहम की करके, कभी न पूछा कि हाल क्या है ?
ये दिल का कीना व रंज क्या है, ये बेकसों से मलाल क्या है ?
सितम हजारों किये हैं लेकिन, दिलाई राहत कभी न दिल को।
उमर के लहमें कफ़स में गुज़रे, खुशी हो दिल को मजाल क्या॥
कहीं जो फरियाद कर दी इकदम तो बोले ऐसा मचल के हम से।
'मचाया आखिर है क्या ये ऊधम ये कैसी जिद हैं बवाल क्या है' ?
सहेंगे जब तक कि हम में दम है, तुम्हारे अन्दाजों नाज़ बेजा।
कलेजा पत्थर का कर चुके हम, तुम्हारे दिल में खयाल क्या है॥
ये दिल में हसरत ही ले चले हम, ज़ुबान अहनी पै ये शिकायत।
जवाब पूरा न दे सके तुम ये कहते कहते सवाल क्या है ?

आजकल

[ग़ज़ल ४८]

चल रहे हैं जब्र खंजर आजकल।
भर रहे हैं खूं समन्दर आजकल॥
खून चुसता है हमारा रात दिन।
रहे गये हम फ़क्त पिंजर आजकल॥
जो रहे पकते वो छाले फूटकर।
वह रहे हैं दिल के अन्दर आजकल॥
देखना चाहो गुलामों को अगर।
हिन्द के देखो मुछन्दर आजकल॥
क्या कहें कैसा ज़माना आ गया।
बन रहे मैं शेर बन्दर आजकल॥
हैं गले मैं तौक़ और रखते हैं जो।
साहवानों का पुछन्दर आजकल॥
नाचते हैं घूंघरू पहिरे हुए।
जो रिझाने को कलन्दर आजकल॥
आये हो गुलज़ार तो कुछ करचलो।
ढूड़ लो कोई कमन्डल आजकल॥

हस्ती है क्या मिटायेगा तू निशां हमारा

[कव्वाली ४९]

मन्जूर है मिटाना नामो-निशाँ हमारा।
वीरान कर दिया है हिन्दोस्ताँ हमारा॥
क्या आज भी न ख़्वाहिश पूरी हुई तुम्हारी।
सब तो मिटा दिया है अमनों, अमाँ हमारा॥

जितना क़लम करोगे फूलैं—फलेंगे उतने ।
सूना कना कभी न होगा ये गुलसितां हमारा ॥
आगे ही हम बढ़ेंगे पीछे नही हटेंगे ।
रोके नहीं रुकेगा ये कारवाँ हमारा ॥
सहते ही आ रहे हैं कितना सहेंगे बोलो ।
बेहतर है काट लो सर अब पे मियाँ हमारा ॥
गरदन पै बेगुनाहों के तेग़ क्यों न ख़म हो ।
जल्लाद बन गया है अब हुक्मरां हमारा ॥
गुलशन को ख़ाक वीराँ कर तो दिया है तिसपर ।
ठानी है छीनने की उजड़ा मकाँ हमारा ॥
जीने की आरज़ू ही जब रह गई न हमको ।
क्या कर सकेंगी तेरी ये धमकियाँ हमारा ॥
क़ायम जहाँ है जब तक हम बे निशन होंगे ।
हस्ती है क्या मिटायेगा तू निशाँ हमारा ॥
"आज़ाद" तू न घबरा पहुंचो है आस्मा तक ।
आफ़त करेंगी बरपा आहो-फुग़ाँ हमारा ॥

नौकर शाह !

यह तू ने क्या किया अरे यह हुई तुझे है कैसी चाह,
किसे पकड़ने जा कर तू ही पकड़ गया ओ नौकरशाह !
स्वयं तुझे ही लगा लौट कर छोड़ा तू ने कैसा तीर,
बंधा स्वय अपने बन्धन में, तू क्यों यों हो गया अधीर ? ॥१॥
उस को अपना रिपु कहता है, जो अजात रिपु है सच्चा,
मनुज मात्र का प्रेमी जिसको जान रहा बच्चा बच्चा ।
जिसकी मोहन मुरली सुन कर मुग्ध हो रहा है संसार,
अच्छा न्याय दिखाया तू ने उसे भेज कर कारागार ॥ २ ॥

कारागार ! चोर डाकू ही रखने को है स्थान जहाँ,
ठौर ठौर पर, क्षण क्षण में है, कष्ट और अपमान जहां।
उसी जगह रक्खा जावेगा हम सब का अपना गाँधी,
किस नवीन परिवर्त्तन-सूचक आ पहुंची है, यह आँधी ?॥३॥
ऐसा और कौन जनता को संयत रखने बाला है,
ऐ, क्या कहा-"मशीन गनें हैं"? जिनका मुंह खुद काला है।
"बम के गोले हैं" स्वयमपि ही वे फट कर उड़ जावेंगे,
"डायर भी हैं" फायर की वे कारिख ही फैलावेंगे ॥४॥
"पकड़ लिया है गाँधी जी को" "कहते हो क्यों जहाँ तहाँ,
ऐसी ऊँची वृहदात्मा को रक्खो, ऐसा स्थान कहाँ ?
नगर नगर में गाँव गाँव में हाट बांट में बन बन में,
जिधर देखते गाँधी जी ही घूम रहे हैं जन जन में ॥५॥
मदन सरीखों के शोणित में रंगे हुए हैं जिन के हाथ,
रह सकते स्वच्छंद कभी क्या गान्धी उन लोगों के हाथ ?
तपो भूमि कारागृह ही है उनको समुचित स्थान यहाँ,
लाखों हृदय भारतियों के पहुंचे उनके साथ जहाँ ॥६॥
भारत भूमि ! हुई है तुम को आज प्रसब—पीड़ा बैसी,
कभी कंस—कारागृह में थी हुई देवकी को जैसी।
कुछ डर नहीं, प्रसन्न चित्त हों, मिटने ही वाला भय है,
सफल तपोनिष्ठा होगी यह, जय है, सम्मुख जी जय है ॥७॥

वे गुनाहों की आहें

[ग़ज़ल ५०]

असीरों से डरता है सैय्याद होकर।
अरे ज़िवह कर इनको दिल शाद होकर॥

हमारे लिये क़ैद ख़ाना भी घर है ।
कहीं हो रहेंगे हम आज़ाद होकर ॥
ये जक्ते फुगां वे गुनाहों की ज़ालिम ।
तुझे रहने देंगी न दिल शाद होकर ॥
ग़रीबों के जो दिल सताता रहेगा ।
रहेगा वो एक रोज़ बरबाद होकर ॥
हमीं पर ये जौरो जफ़ाओ ताअद्दी ।
हमारे ही मुल्कों में आबाद होकर ॥
तरीक़े अमल नाम सब मिस्ले हैवां ।
अरें तोबा आदम की औलाद होकर ॥
फ़रामोश क्यूं कर हों तेरी जफ़ाये ।
सबक़ भूलता है कहीं याद हो कर ॥
मोहम्मद अली साये पञ्ज तनमें ।
गये सिम्त ज़िन्दा में दिल शाद होकर ॥
सताता तो हैं लेकिन इतना समझ ले ।
मैं जाता हूं दुनिय से नाशाद हो कर ॥
नहीं क़ौम वह क़ौम कहने के क़ाबिल ।
रहे जो न दुनियां में आजाद हो कर ॥

बेजार तुम से हम हैं

[ग़ज़ल कव्वाली ५१]

अय ग़ैर मुल्क वालो वेजार तुमसे हम हैं ।
तैय्यार हमसे तुम हो बीमार तुमसे हम हैं ॥
हर वक्त मुपतलाये आजार तुमसे हम हैं ।
सच्ची तो बात यह है बेजार तुमसे हम हैं ॥

हम हर तरह खुशी थे आराम कर रहे थे ।
काम आयें आकवत में वह काम कर रहे थे ॥
आराम में सुवह से हम शाम कर रहे थे ।
आगाज करचुके थे अनजाम कर रहे थे ॥
नाहक को तुमने आकर इक खलवली मचादी ।
हिन्दोस्तां में आकर नई आग सी लगादी ॥
भारत निवासियों को मजनू बनाके मारा ।
बुत बनके तुमने हमको बन्दा बनाके मारा ॥
जो मर रहे थे उनको फिर २ जिलाके मारा ।
जो जी रहे थे उनको कुछ दे दिलाके मारा ॥
जापान हमसे आगे कितना निकल गया है ।
और चीन पेश्तर से कितना संभल गया है ॥
अमरीका देखो गिर कर फिर भी संभल गया है ।
मग़रिब हमें कभी का नीचे कुचल गया है ॥
तुमने हमारे हक़ में कुछ भी न पर कसर की ।
सीने स सिल हमारे इक इंच भी न सरकी ॥
उल्टो हमारी हालत वह आपने बना दी ।
जो भी उधर से गुज़रा दो ठोकरें लगादी ॥
आखिर ये हिन्द वाले बेजान तो नहीं है ।
लाचार गो बहुत हैं अनजान तो नहीं हैं ॥
इनमें भी क़ौमियत है लेकिन अभी निहां है ।
दुनियां में सबसे अच्छो यक इनकी दास्तां है ॥
इनके बड़ों ने साहब क्या कुछ नहीं किया था ।
कब देश से हटे थे कब सर नहीं दीया था ॥
आख़िर निभेगी कब तक यों आपकी हमारी ।
है हाय २ लबपर आगोश में कटारी ॥

अय अहिले हिन्द कह दो सब यक जवान होकर
आपुस में हम रहेंगे अब जिस्मो जान होकर ॥
चमकेंगे आस्मां पर क़ौमी निशान होकर ।
अब हिन्दोस्तां रहेगा हिन्दोस्तान होकर ॥
दुनियां के लोग हमपर मुतलक नहीं हसेंगे ।
चालों में अब वृटिश की शैलेन्द्र नहिं फसेंगे ॥

झूठी बातों पर कैसे यक़ीन हो

[ग़ज़ल ५२]

कैसे हमें यक़ीन हो ऐसी ज़ुबान पर ।
जिसका नहीं कयाम किसी भी बयानपर ॥
हज़रत ज़ुवान एक है बदलो न जानकर ।
जब दे चुके ज़बान हमें मेहमान कर ।
काबू ज़वान पै हो तो काबू जहाँन पर ।
कैसे हमें यक़ी हो ऐसे बयान पर ॥
किसी को हो किसी के काम से तक्लीफ ।
मगर हमको तो है तुम्हारे नाम से तक़्लीफ़ ॥
नामो निशान भी न रहेगा ज़हानपर ।
कैसे हमें यकीन हो किसी भी बयानपर ॥
देख ली बस आप की ईमानदारी हो चुकी ।
दोस्ती भी अब हमारी और तुम्हारी हो चुकी ॥
क़ाबू नहीं है आप का अपनी ज़ुबान पर ।

हमारी राय अब तुम से नहीं मिलती सुनो हज़रत ।
हमारा रास्ता ये है तुम्हारा रास्ता वो है ॥
बस हो ज़ुबान एक तो काबू जहाँन पर ।
"शैलेन्द्र" यकीं क्यूं हो ऐसे बयान पर ॥

कैसे हो

[ग़ज़ल ५३]

कहां के तुम कहां के हम मोहब्बत हो तो कैसे हो ।
तुम्हारी चालबाज़ी पर मुरव्वत हो तो कैसे हो ॥
मिलो शीरीं ज़ुबां हम से मिलें शीरो शकर जैसे ।
मगर नमकान से दर अस्ल मिल्लत हो तो कैसे हो ॥
खुदी के सामने तुमको नहीं ख्वाहिस खुदा की भी ।
हमारे साथ फिर सच्चा मोहब्बत हो तो कैसे हो ॥
तुम्हारा क्या भरोसा है घड़ी भर में बदलते हो ।
तुम्हारी बात से हक़पर शहादत हो तो कैसे हो ॥
तुम्हारी टेक चलती है जीये चाहे मरे कोई ।
नहीं हो तुम हमारे फिर क़राबत हो तो कैसे हो ॥
विरासत तो हमारी है मज़ा लूटो व लेकिन तुम ।
मगर देखो अमानत में ख्यानत हो तो कैसे हो ॥
दग़ाबाजी बग़ैरह बाज़ियों से बाज़ आये हम ।
तुम्हारी जालसाज़ी से बरीयत हो तो कैसे हो ॥
तुम्हारे बाप दादे तक मरे सारी गुलामी में ।
बढ़े तो हो मगर तुममें शराफ़त हो तो कैसे हो ॥
बने सीधे कबूतर से मगर हो सांप से शातिर ।
तुम्हारी रूहे नाक़िस में सदाकत हो तो कैसे हो ॥

चलाते हाथ हो नाहक़ निहत्थे तालिबे हक़पर।
लिहाज़ा ख़ल्क़ में तुम नेक ख़सलत हो तो कैसे हो॥
हमारी नाक में दम है तुम्हारी चाल बाज़ी से।
यही जी चाहता है अब कि रुसख़त हो तो कैसे हो॥
बुरी आदत तुम्हारी है घरों घर फूट बोने की।
मज़ा अब शौक़ से चखो रियायत हो तो कैसे हो॥

भारत देश की दुरावस्था

[गज़ल ५४]

मरगये हैं इस जहां में याद आने के लिये।
मौत आने के लिये है जान जाने के लिये॥
अय ऋषोसन्तान तेरा आज अबतर हाल हाल है।
हैं सभी तैय्यार तेरा हक़ पचाने के लिये॥
आज हक़ इन्सान के भी पाय तुम सक्के नहीं।
तुम बने बन्दर मदारी हैं नचाने के लिये॥
न्याय और इन्साफ़ का अब हिन्द में घर है नहीं।
हाकिमों की है हकूमत लूट खाने के लिये॥
क्या समय गर्दिश का आया आज प्यारे हिन्द पर।
है जहां मुस्तैद इसको मार खाने के लिये॥
भेडियों के मुंह खुले हैं अज़दहे तैयार हैं।
हाय भारत देश को अब निगल जाने के लिये॥
हरतरफ़ से ज़ालिमों की हैं जबानें लपकतीं।
खून पीकर हड्डियां भी चाब जाने के लिये॥
जुल्म हैं वे कौन से जिस्के न तुम होते शिकार।
है हुये इन्सान भी हैवां कहाने के लिये॥

आह ! क्या इन्सान भी ज़िन्दा जहां में यों रहै ।
या गुलामी के लिये या कैदख़ाने के लिये ॥
एसे नाज़ुक वक्त में भी गर न तुम जुम्बिश करो ।
तो न फिर बाक़ी रहै दीपक जलाने के लिये ॥
ध्यान करलो पूर्वजों का हो कमर कसकर खड़े ।
यह दुलारे का निवेदन है जगाने के लिये ॥

गिरफ्तारी तुमको मुजिर हो रही है

[कव्वाली ५५]

कभी स्वत्व अपना नहीं छोड़ने की ।
रियाया यहाँ की निडर हो चुकी है ॥
रहो देह यह गर सितम मेट देंगे ।
सितम की भी पूरी उमर हो चुकी हैं ॥
तुम्हारे भी ज़ुल्मों की हद हो चुकी है ।
इधर भी खुदा की मदद हो चुकी है ॥
महात्मा को क्यों कर किया कैद तुमने ।
गिरफ़्तारी तुमको मुज़िर ही रही है ॥

दमन का ख़ंञ्जर

[ग़ज़ल ५६]

चलाले जालिम दमन का ख़ञ्जर अब अपनी गरदन झुकायेंगे हम
नहीं है परवाह मशीनगन की यह छाती अपनी अड़ायेंगे हम ॥
अगरचे बन्दूक हो चलना हमारे तन पै तमक तमक कर ।
तो पहिले कहदे साफ़ मुझसे जिगर कलेजा बतायेंगे हम ॥

है शौक जाने का जेल मुझको मातृ सेवा ही करते करते ।
अगर लगानी जो हथकड़ी हो तो हाथ अपना बढ़ायेंगे हम ॥
जो देनी फांसी मुझे पसन्द हो जरा ने मुझसे प्रपञ्च ज्यादः ।
खुशी से जायँगे हँसते हँसते तराना क़ौमी सुनायेंगे हम ॥
अजब ही "शैलेन्द्र" क्या है इसमें तुम्हारा बढ़ने ये इन्तहां हैं ।
हुए अगरचे सफल इसी में स्वतंत्र भारत बनायेंगे हम ॥

कबतक

[ग़ज़ल ५७]

ज़ालिम तेरा दमन यह कब तक नहीं रुकेगा ।
कबतक यहां से आफ़त का घन सघन हटेगा ॥
कब तक हमारे नेता कैदी बने रहेंगे ।
वह जांघियां और कुरता कबतक नहीं खुलेगा ॥
कब तक बने रहेंगे वे बैल कोल्हुओं के ।
चक्की चलाना उनका कबतक नहीं छुटेगा ॥
कबतक के खून भारत के बेकसों जनों का ।
होता ही यों रहेगा कब तक नहीं रुकेगा ॥
कब तक गले की तख़्ती उनकी नहीं कटैगी ।
वह कैदियों का बाना कबतक नहीं छुटेगा ॥
हा ! दैव ! दैव करते चिल्लायेंगे कहां तक ।
"शैलेन्द्र कब तलक ह्यां" सुख शान्ती न जमैगा ॥

जबतक

[ग़ज़ल ५८]

जब तक कि काम पूरा कांग्रेस का न होगा ।
जब तक प्रचार खद्दर वे इन्तहा न होगा ॥
जब तक अदालतों की तख्ती न शून्य होगी ।
जब तक शराबियों का पीना न बन्द होगा ॥
जब तक गुलाम खाने बालक नहीं तजेंगे ।
जब तक कुरीतियों का यां अन्त भी न होगा ॥
जब तक कि हिन्दवासी निज स्वार्थ नहिं तजेंगे ।
जब तक विदेशी कपड़ा विकना न बन्द होगा ॥
जब तक नहीं पधारें भारत में कृष्ण प्यारे ।
दुःख जलधि में पड़े हैं तब तक अमन न होगा ॥
जब तक कि हिन्दु मुस्लिम में एकता न होगी ।
"शैलेन्द्र" तब तलक या दुर्लभ स्वराज्य होगा ॥

एक देशभक्त का साहस

[ग़ज़ल ५९]

दमन करो जितना जी चाहे हम नहिं पीठ दिखायेंगे ।
अव तो अड़ कर बैठ गए भारत स्वाधीन बनायेंगे ॥
या स्वतंत्रता लहरायेगी या तो होगा हिन्द मसान ।
तेंतिस कोटि लाशों पै शासन तब करना सुख से मतिमान ॥

हाय! बृटिश ने शान्त प्रजा की सुख की नीद बहा डाली।
गिरफ़्तार कर-लो-गान्धी को जीवित उन्हे जला डाली ॥
शान्त तपस्वीयों का दल है हिन्सा नही हमारा काम।
मरते नहीं "शैलेन्द्र" जोव पुनि नया वस्त्र पहनायेंगे ॥

एक देश भक्त की निर्भयता

[ग़ज़ल ६०]

डरेंगे हम नहीं हरगिज़ फिरंगी अब तेरे डर से।
हटेंगे हम नहीं पीछे अगर सर हो जुदा तनसे ॥
हज़ारों हो गये शौकत. मौहम्मद, गान्धी भारत में।
गिरफ़्तारी सहित खुश हो चले जाओगे खुद जड़ से ॥
डराना और धमकाना, सताना तेरा नाहक़ है।
नहीं अब डरने वाले हैं तुम्हारे तेगो ख़ंज़र से ॥
तुम्हारी भीतरी बातें बहुत कुछ हम समझते हैं।
हटें "शैलेन्द्र" हरगिज़ नहि तुम्हारे दमन करने से ॥

देख लेना

[क़व्वाली ६१]

हमारी भी साहब, अक़िल देख लेना।
मिटे हिन्द की फिर, शकल देख लेना ॥ १ ॥
दिखायेंगे दुनियां को, ऐसे करश्मे।
किसी से न होगी, नक़ल देख लेना ॥ २ ॥
लगी है लगन हमको देशो को हर दम।
तौ हरफन पै अपना, दख़ल देख लेना ॥ ३ ॥

न पहिनेंगे ग़ैरों का, कश्मीरा नक़ली।
उसी को यहां तुम. असल देख लेना ॥ ४ ॥
बताते हैं ईजाद की, मां ज़रूरत।
हो सादिक़ यहां वह, मसल देख लेना ॥ ५ ॥
बहाई है आज़ादी, की हमने गङ्गा।
करेंगे उसी में गुसल देख लेना ॥ ६ ॥
तुम्हारे सबब थे, जुदा हम दो भाई।
रक़ीबो तुम्हीं अब, वसल देख लेना ॥ ७ ॥
न झिझकेंगे मक़तल में खंजर के डर से।
करो तुम हमें जब, क़तल देख लेना ॥ ८ ॥
रहे लाखों साबित. क़दम हैं मुरब्बी।
ऐ ज़ालिम पुरानी. मिस्ल देख लेना ॥ ९ ॥
पड़ें बेड़ियां "इन्दु" के, पावों में जब।
तो इसकी भी शादी, डबल देख लेना ॥ १० ॥

दाल गलने की नहीं है अब यहां शैतान की

[ग़ज़ल ६२]

खुल गई है आंख अबतो मुल्क हिन्दोस्तान की
दाल गलने की नहीं हैं अब यहाँ शैतान की ॥ १ ॥
एक दिन दो दिन कि हो खातिर तो कोई कर सके
सदियों होती नहीं है दावतें मेहमान की ॥ २ ॥
जाओ अपने घर को हम तो बाज आये आप से
फिर बुलालेंगे ज़रूरत होगी गर जलयान की ॥ ३ ॥
अच्छा एवज़ आपने नेकी हमारी का दिया,
रौलट बिल जिसकी शहादत दे रहा इमान की ॥ ४ ॥

देवियों के खोले घूँघट मारशल्ला में गये,
सुन चुके हैं सब कथा पंजाब के अपमान की ॥ ५ ॥
जब हरी रावण ने सीताजी तो उसका क्या हुआ,
फूंकदी लंका वहां पर जय हुई हनुमान की ॥ ६ ॥
द्रोपदी के वाल खींचते ही मचा था क्या बवाल,
कौरवों के रक्त से रक्षा हुई थी मान की ॥ ७ ॥
मारशल्ला जिसने जारी था किया पञ्जाब में,
पीठ ठोंकी बृटिशने डायर से उस शैतानकी ॥ ८ ॥
देदी उस डायर को पेन्शन और लाखों का इनाम,
क़द्रदानी की गई ये हिन्द के अपमान की ॥ ९ ॥
फिर भी हमसे यह कहा जाता हैं इनको भूल जाव,
खुलगई है पोल अब तो ब्रिटिश के फरमान की ॥१०॥
जेल भेजो काले पानी फांसी देदो शौक से,
करैंगे तामील पूरी गांधी फ़र्मान की ॥ ११ ॥
लाज पति आजाद शौकत और विपिन सी० आर० दास,
करैंगे अबतो हिफ़ाजत अपने हिन्दोस्तान की ॥ १२ ॥

आवरू सरकार की

[ग़ज़ल ६३]

बे-गुनाहों पर बमों की बे ख़तर बौछर की।
दे रहे हैं धमकियां बन्दूक और तलवार की ॥
बागे—जलियां में निहत्थों पर चलाई गालियां।
पेट के बल भी रैंगाया ज़ुल्म की हद पार की ॥
हम ग़रीबों पर किये जिसने सितम बे-इन्तहा।
याद भूलेगी नहीं उस डायरे बदकार की ॥
यातो हम ही मर मिटेंगे या तो ले लेंगे स्वराज।
होती है इस बार हुज्जत ख़त्म अब हर बार की ॥

शोर आलम में मचा है लाजपत के नाम का ।
ख्वार करना उनको चाहा अपनी मिट्टी ख्वार की ॥
जिस जगह पर बन्द होगा शेर-नर पंजाब का ।
आबरू बढ़ जायगी उस जेल की दीवार की ॥
जेल में भेजा हमारे लीडरों को बे-कुसूर ।
लार्ड रीडिंग ने भी अच्छी न्याय की भरमार की ॥
खून मज़लूमों की 'सरयू' अब तो गहरी धार में ।
कुछ दिनों में डूबती है आबरू सरकार की ॥

क़ज़ा आती है

[कव्वाली ६४]

ज़र्रे २ से वतन के ये सदा आती है ।
गाफ़िलो होश में आवो के क़ज़ा आती है ॥
उलफ़ते मुल्क का आजारे मसीहा मुझको ।
ऐसे बीमार की भी तुझको दवा आती है ॥
क्यूं न हूं दिल से भला वादे सबा का मशकूर ।
तुर्बते क़ौम पै दोफूल चढ़ा आती है ॥
खुदही फँस जाये न इस दाम में सैय्याद कहीं ।
पांव तक बढ़ती हुई ज़ुल्फे दुता आती है ॥
ज़ुर्मे गद्दारी में क़ातिल ने किया कत्ल किन्हें ।
जिनकी मिट्टी से भी खुश बूये वफा आती है ॥
मर रहा होगा कोई जौरो सितम का मारा ।
डन्ठी २ तेरे कूचे से हवा आती है ॥
ना तवानी में किसी का क्या मुसाफिर शिकवा
सरपै कमज़ोरों के हर एक बला आती है ॥

सितमगर नाम मिट जाने को है।

[ग़ज़ल ६५]

ज़ुल्म, ज़ालिम ज़ालिमे शमशीर अब जाने को है।
पुरफ़िज़ों बागे वतन में अब बहार आने को है।

उठ गये दुनियां के ज़ालिम मिट गये नामों निशाँ,
तेरी क्या हस्ती सितमगर नाम मिट जाने को है।

होश कर कुछ नेकियां कर हिन्द के वेजार पर,
शानो शौकत का तेरे आख़िर ज़वाल आने को है।

शौक से जाओ चले आये यहां जिस राह से,
अब यहां क्या पास मेरे और लुट जाने को है?

नेकियां हम आख़िरी दम तक करेंगे आप से,
ज़ुल्मो बे-इन्साफ़ का तरजे अमल जाने को है।

सता लो जितना जी चाहे

[ग़ज़ल ६६]

हम हक़ पर जान देते हैं सता लो जितना जी चाहे।
दबेंगे अब नहीं हरगिज दबा लो जितना जी चाहे॥
नहीं मरने को डरते हम भला फिर जेल क्या शय है।
ये गोले फूल हैं हमको चलालो जितना जी चाहे॥
ख़िताबों को न रक्खेंगे न ओहदे इज़्ज़तें लेंगे।
गुलामी के खिलौने तुम लुटालो जितना जी चाहे॥
न हम कौन्सिल में जायंगे न उनकी शां बढ़ायेंगे।
मिलेगा दिल न अब तुमसे मिलालो जितना जी चाहे॥

न डायर क़ातिलों का है न इस जोशे हकूमत का।
चलेगा अब न यह चक्कर चलालो जितना जी चाहे॥

असहयोगी शहीदों के मुकाबिल अब न ठहरोगे।
ये सैनिक शस्त्र बल अपना दिखालो जितना जी चाहे॥

हमारा ख़ून बेखटके बहा लो जितना जी चाहे।
हटेंगे अब न हम तुम से हटालो जितना जी चाहे॥

हमारे देश का शासन हमारा है करेंगे हम।
जमैगा अब न इसपर रंग जमा लो जितना जी चाहे॥

उठा है केतु भारत का बजा है शंख गान्धी का।
विजय "शैलेन्द्र" आखिर है दबालो जितना जी चाहे॥

गर स्वराज्य मिल जाये

[कव्वाली ६७]

हमारे दर्द का कोई इलाज मिल जाये।
दबा हो ऐसी कि जिससे मिजाज़ मिल जाये॥

मरीज़े ग़म पै मसीहा की अब इनायत हो।
बढ़े न वादा क़यामत का आज मिल जाये॥

नहीं ये चाहते हम ग़ैर के बने हाकिम।
नहीं हवस कि हमें तख्तो ताज मिल जाये॥

यहाँ तो फ़िक्र है बस पेट की पड़ी हरदम।
शिकम पुरी ही को पूरा अनाज मिलजाये॥

हैं सबसे पीछे पड़े दौड़ में तरक्की के।
बढ़ें हम आगे हमें गर स्वराज्य मिल जाये॥

॥ ॐ ॥

❀ वन्देमातरम् ❀

भारत सपूतो उठो ! अपने कर्तव्य को समझो !!
देश की सेवा करो !!!

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है॥
अन्धकार है वहां जहां आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है॥

प्रिय पाठको !

संसार में जाति अथवा देश की उन्नति तथा अवनति करने के हेतु उस जाति अथवा देश का इतिहास एवं साहित्य ही मुख्य साधन हुआ करता है। जिस जाति का इतिहास एवं साहित्य सच्चा और बीरता पूर्ण विद्यमान रहता है, संसार में वही जाति सर्वोपरि उन्नति के शिखर पर चढ़ा करती है, और जिसका सच्चा इतिहास ही लोप हो जाता है संसार में वही जाति अधोगति के गड्ढे में ड़िरकर पद्दलित हुआ करती है।

कहने का तात्पर्य्य यह है कि किसी जाति अथवा देश की उन्नति या अवनति का दारोमदार उस देश के इतिहास एवं साहित्य के ऊपर ही निर्भर है ! अतः इतिहास एवं साहित्य का सुरक्षित रखना और सच्चे इतिहास एवं साहित्य का प्रचार करना परमावश्यक है । जिन देशों का साहित्य एवं

इतिहास सुरक्षित रहा है वे देश गिरते २ आज भी संभल गये हैं, जैसे अमरीका, जापान इत्यादि !

और जिन देशों का सच्चा इतिहास व साहित्य ही मिट गया है वे देश आज भी संसार में पद्दलित और तिरस्कृत हो कर अधोगति को पहुँच चुके हैं, जैसे हमारा भारतवर्ष ! भारत की आधुनिक अधोगति का मुख्य कारण भी (जहाँ तक हमने अनुसन्धान तथा विचार किया है) प्राचीन सच्चे इतिहास एवं साहित्य का लोप हो जाना ही है। इसमें सन्देह नहीं कि विदेशियों ने भारत के प्राचीन पवित्र इतिहास एवं साहित्य पर कुठाराघात कर मटियामेट तथा कलङ्कित करने और लांच्छन लगाने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी ! इतना ही नहीं जहां तक उनसे हो सका उन्होंने हमारे सच्चे पवित्र इतिहास एवं साहित्य पर भरसक पानी भी फेरा।

परन्तु ध्यान रहे किसी भी वस्तु का वीज नष्ट नहीं हुआ करता। इस सिद्धान्तानुसार प्राचीन इतिहास एवं साहित्य को नष्ट करने तथा जलाने पर भी कुछ न कुछ चिन्ह स्वरूप आज भी बाकी हैं ! यही कारण है कि भारत को अधोगति होने पर भी आज पर्यन्त भारत वासियों में अनेक ऐसी बातें पाई जाती हैं जो दूसरे देशों के जन साधारणों में नाम मात्र भी नहीं मिलती ! हां प्राचीन उन्नति के मुकाबिले में तो इस समय भारत की अवश्य ही अवनति हुई है परन्तु इस अवनति पर सोच करना व्यर्थ है।

कालचक्र की गति के अनुसार गिरना उठना यह तो लगा ही रहता है क्योंकिः—

उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखण्ड है।
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तण्ड है॥

अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति कला।
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन हो क्या भला॥
होता समुन्नति के अनन्तर सोच अवनति का नहीं।
हां सोच तो है जो किसी की फिर न हो उन्नति कहीं॥

बस उपरोक्त ईश्वरी नियमानुसार ही भारत को पुनः असली स्वरूप में लाने के हेतु अतिकाल से हम लोगों की हार्दिक अभिलाषा थी कि मातृ भाषा हिन्दी में एक नवीन उच्च कोटि का मासिक पत्र और ग्रन्थमाला प्रकाशित की जाय जिसमें समयानुसार समय समय पर भारत सन्तानों के सोये हुये सद्भावों को जागृत करने के हेतु उत्तमोत्तम भावपूर्ण लेख, कविता इत्यादि छपा करें। अपनी इस शुभेच्छा की पूर्ति के हेतु गत वर्ष हम लोगों ने पत्र का समस्त प्रबन्ध भी कर लिया था, और पत्र प्रकाशित कराने वाले ही थे कि इसी दौरान में हम लोगों के ऊपर सरकार की विशेष कृपा दृष्टि हुई! और हमारे मुख्य कार्य कर्ताओं में से कई सज्जनों को नौकरशाही १२४ धारानुसार महामान्य सम्राट् के घर का निमन्त्रण पत्र देने के अतिरिक्त एक एक वर्ष कारावास का दण्ड देकर अब उन्हें और भी परमोत्साहित कर दिया है। बस इसी कारण गत वर्ष तो हमारी इच्छाओं पर पानी फिर गया था। परन्तु अब ईश्वर की कृपा से हमारे कार्य कत्तागण एक एक वर्ष कृष्ण भवन में कठिन तप करने के पश्चात् कर्मयोगी बन कर वापिस आ गये हैं। और देश तथा मातृ भाषा की सेवा करने के हेतु कार्य क्षेत्र में उतर पड़े हैं! इसी से हमें अब पुनः नये सिरे से अपनी शुभाभिलाषा के पूर्ण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। और अनेक महानुभावों के सानुरोध करने पर हमने इस कार्य में अपने जीवन लगाने का निश्चय

कर लिया है। इतना ही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से काशी में "नवयुवक महामण्डल" की स्थापना कर के, उसी के अन्तर्गत कार्य करना भी प्रारम्भ कर दिया है। भारत की वास्तविक प्राचीन ऐतिहासिक अपूर्व छटा का दिग्दर्शन करने, तथा भारतसन्तान के सोए हुए सद्भावों को जगाकर पुनः सञ्चरित करने; और कर्म योगी बन कर निज कर्तव्य पालन करने के हेतु, हमने काशी से "नवयुग" नामक हिन्दी में उच्चकोटि का आदर्श सचित्र मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया है, जिसमें ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, कलाकौशल, स्त्री शिक्षा सम्बन्धी, स्वराज्य विषयक, उपन्यासिक, नाटक , गल्प, व्यङ्गोक्ति, इत्यादि इत्यादि समयानुसार सभी प्रकार के लेख तथा कवितायें छपती हैं। आकार प्रकार सरस्वती का सा है। इतने उत्तम सचित्र मासिक पत्र का मूल्य भी सत्र साधारण की सुबिधार्थ केवल ४॥) साढ़े चार रुपये मात्र ही रक्खा है। पत्र नियमित रूप से प्रत्येक मास के अन्त में ठीक समय पर प्रकाशित हो जाता है। संसार के सभी सुप्रसिद्ध लेखकों के लेख इस "नवयुग" पत्र में छपते हैं। अतः आप भी आज ही वार्षिक पूरा अथवा अर्ध मूल्य अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजकर ग्राहक बन जाइये अथवा ॥) आठ आना के टिकट भेज कर नमूने का अंक मंगा लीजिये। स्मरण रहे! "नवयुग" के समस्त ग्राहकों को वर्ष के अन्त में एक बार उनकी इच्छानुसार "नवयुग ग्रन्थमाला" की कोई भी दो पुस्तकें उपहार स्वरूप में भेंट की जायंगी।

२–साधारण जनता के सम्मुख समयानुसार उत्तमोत्तम भावों को रखने के हेतु हमने "नवयुग ग्रन्थ माला" के नाम से एक ग्रन्थ माला भी निकालना प्रारम्भ किया है, जिसमें

समय तथा आवश्यतानुसार विविधि विषयों से विभूषित हिन्दी की पुस्तकें प्रकाशित कर अल्प मूल्य में सर्व साधारण की भेंट की जाती हैं। ग्रन्थमाला में आठआना अग्रिम प्रवेश शुल्क देने पर स्थाई ग्राहक बनाये जाते हैं! कौंग्रेस कमेटियों, किसान सभाओं,सेवा सम्मतिओं,आर्य समाजादि संस्थाओं को वितीर्णार्थ अधिक पुस्तके मंगाने पर तथा स्थाई रूप से ‘‘नवयुग” मासिक पत्र के ग्राहकों तथा विद्यार्थियों को समस्त पुस्तकें पौने मूल्य में दी जाती हैं। देश के नाते हमारी आपसे सादर प्रार्थना है कि आप इस ग्रन्थमाला के स्थाई ग्राहक बन कर और दूसरों को बनाकर देश के कार्य में हाथ बटावें।

ध्यान रहे! “नव युग ग्रन्थमाला” और ‘‘नवयुग” मासिक पत्र द्रव्योपार्जन अथवा व्यापारिक इच्छा से नहीं वरन हिन्दी प्रचार तथा स्वदेश सेवार्थ ही निकाले गये हैं। आप विश्वास रखिये! उपरोक्त दोनों कार्यों से यत्किञ्चित जो कुछ भी आय होती है, वह सब देश सेवार्थ ही व्यय की जाती है। अर्थात इस आय से मेलों तथा ग्रामों में निर्धन मनुष्यों को बिना मूल्य पुस्तके बितीर्ण कराई जाती है। ग्रामों में उपदेशक, भजनीकों से भारत सुधार सम्बन्धी व्याख्यानों तथा भजनों द्वारा प्रचार कराया जाता है, और यथा समय आवश्यक्तानुसार इसी भांति से हिन्दी तथा देश सेवा के अनेक कार्य किये कराये जाते हैं।

देश के इस महान कार्य में हमारा हाथ बटाना आप का परम कर्तव्य है।

अतः आप हमारी पुस्तकों और मासिक पत्र के ग्राहक बना कर प्रचार करें।

और लेख कविता इत्यादि लिखकर प्रकाशनार्थ हमारे पास भेजने की कृपा करें।

"नवयुग" के स्थाई ५ पांच ग्राहक बनाने वाले महानुभावों को छै मास और १० दस ग्राहक बनाने वाले महानुभावों को एक वर्ष पर्यन्त "नवयुग" मासिक पत्र बिना मूल्य दिया जायगा। इस के अतिरिक्त लेख, कविता इत्यादि सर्वोपरि होनेपर वर्ष के अन्त में लेखकों को उचित पुरस्कार, पदक इत्यादि भी दिये जायंगे।

हमें पूर्ण आशा है कि आप यथाशक्ति, यथायोग्य लेखादि से अथवा ग्राहकादि बनाकर देश के इस महान कार्य्य में हमें सहायता प्रदान करेंगे।

हमें दृढ़ विश्वास है कि आप यथाशक्ति इस कार्य में हमारा हाथ बटाकर स्वदेश सेवा तथा परोपकार करते हुए यश और पूण्य के भागी बनेंगे।

निवेदकः—

भवदीय
मंत्री नवयुक महामण्डल
काशी

व्यवस्थापक
प्रकाशक विभाग,
नवयुक महामण्डल
काशी।

ॐ

लेखक तथा सम्पादक के कार्य्यक्रम की पद्धति

भारतीय राष्ट्र निर्माण के लिये सदैव प्रयत्न शील रहना अर्थात् भारत में राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं राष्ट्र धर्म का प्रचार करना। हिन्दु मुसलमानों में सच्चा क़ौमी मेल सदैव बनाये रखने का प्रयत्न करना, और भारत के कोने कोने अर्थात् बड़े बड़े शहरों के महलों से लेकर ग्रामों के टूटे फूटे खँडहरों तक में भी स्वराज्य तथा कांग्रेस के भावों का प्रचार करना। शहर तथा ग्रामों में, धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, कुरीतिनिवारण स्त्री सिक्षा, अनाथरक्षा इत्यादि विषयों में समयानुसार वक्तृता गान एवं लेखों, पुस्तकों और समाचार पत्रों द्वारा राष्ट्रीय एवं धार्मिक भाव भर कर भारत के प्रत्येक बच्चे बच्चे को स्वात्माबलम्बी एवं कर्मयोग पथ गामी बनाना है।

पत्र व्यवहार का पता—

व्यवस्थापक
"हिन्दी नवयुग" कार्य्यालय
काशी